संगीत वादन

(ग्यारहवीं श्रेणी के लिए)

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संस्करण : 2016 .... 10,000 प्रतियाँ

All rights, including those of translation, reproduction and annotation etc., are reserved by the Punjab Government

संपादक एवं संयोजक : श्रीमती चरणप्रीत कौर

लेखक– (*i*) श्रीमती वरिन्द्र कौर, लैकचरार संगीत, सरकारी सी०. सैं. स्कूल लड़कियां नाभा, पटियाला।

(*ii*) श्रीमती मनप्रीत कौर, संगीत टीचर, सरकारी मॉडल सी०. सैं. स्कूल सैक्टर–37सी, चण्डीगढ़।

(*iii*) श्रीमती मनदीप कौर, लैक्चरार संगीत, सरकारी सी०. सैं. स्कूल, 3बी–I, मोहाली।

(*iv*) श्रीमती करणवीर कौर, लैक्चरार संगीत, प:स:श:ब, आदर्श सी०. सैं. स्कूल, धरदिऊ बुटर,श्री अमृतसर साहिब।

अनुवादक– श्रीमती मनदीप कौर

कवर डिज़ाइन– (चित्रकार) श्री मनजीत सिंह ढिल्लों सीनियर आर्टिसट पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड।

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी–होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य–पुस्तकों पर जिल्दबन्दी नहीं कर सकता। (एजेंसी–होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य–पुस्तकों का जाली प्रकाशन, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अन्तर्गत गैरकानूनी है।
   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य–पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मार्क ' वाले कागज़ पर ही मुद्रित की जाती हैं।)

मूल्य : ₹ 30.00

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज़–8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर–160062 द्वारा प्रकाशित एवं मैसर्स नोवा पब्लिकेशन्ज़, सी–51, फोकल प्वाईंट एक्सटेन्शन, जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड अपनी स्थापना के समय से ही स्कूल स्तर के सभी विषयों के पाठ्यक्रम संशोधित करने और संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने में प्रयत्नशील रहा है।

संगीत (वादन) विषय का पाठ्यक्रम कई वर्षों से पुराना ही लागू था। आधुनिक युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस विषय के पाठ्यक्रम को संशोधित करना समय की माँग थी। अतएव: प्रवेश वर्ष 2015-16 एन.सी.एफ 2005 और पी.सी.एफ 2013 सुझावों के अनुसार क्षेत्रीय विषय विशेषज्ञों के सहयोग से पाठ्यक्रम का संशोधन किया गया। संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रवेश वर्ष 2016-17 से संगीत विषय की नई पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक ग्यारहवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है। पुस्तक की विषय वस्तु को रोचक, सरल और स्पष्ट बनाने के लिए आवश्यक साज़ों और संगीतज्ञों के चित्र दिए गए हैं। वादन के अभ्यास हेतु क्रियात्मक भाग में सुर अभ्यास पर विशेष बल दिया गया है ताकि विद्यार्थी संगीत को क्रियात्मक रूप में ग्रहण कर सकें।

आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों में संगीत विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करेगी। यह पुस्तक अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। फिर भी पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से प्राप्त सुझाव आदर सहित स्वीकार किए जाएँगे।

चेयरपर्सन

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

विषय सूची (वादन)

अध्याय	विषय	पृष्ठ नं.
1.	परिभाषाएँ : संगीत, ध्वनि, अलंकार, ताल, झाला, आरोह, अवरोह, पकड़, आलाप, तोड़ा।	1
2.	मिज़राब के भिन्न बोल : आकर्ष प्रहार और अपकर्ष प्रहार	12
3.	वादी स्वर, सम्वादी स्वर, अनुवादी स्वर, विवादी स्वर, वर्जित स्वर	14
4.	जीवनी : (*i*) पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे	18
	(*ii*) श्री नरिन्दर नरूला	22
5.	भारतीय संगीत में वाद्यों का वर्गीकरण : तत वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य और घन वाद्य	25
6.	मेरा मन पसंद विषय : संगीत	30
7.	संगीत का साज–सितार (इतिहास, अंग वर्णन)	33
8.	नाद–परिभाषा, भेद	39
9.	गत–मसीतखानी गत, रज़ाखानी गत	42
10.	अलंकार : बिलावल थाट, कल्याण थाट	47
11.	राग कल्याण : साधारण परिचय, आलाप, मसीतखानी गत, रज़ाखानी गत, तोड़े	49
12.	राग अल्हिया बिलावल : साधारण परिचय, आलाप, रज़ाखानी गत, मसीतखानी गत, तोड़े	57
13.	राग वृन्दावनी सारंग : साधारण परिचय, आलाप रज़ाखानी गत, मसीतखानी गत, तोड़े।	63
14.	तालें : ताल दादरा, कहरवा ताल, तीनताल, झपताल, चारताल (चौताल)	69
15.	धुन : राग कल्याण, वृन्दावनी सारंग	72
16.	राष्ट्रीय गान, नियम, स्वरलिपि	75
	प्रश्न बैंक	78

पाठ 1

परिभाषाएँ

(*i*) संगीत

सृष्टि के रचनाकार की सृष्टि में बेअन्त रचनाएँ पाई जाती हैं। और जीवों की तरह मनुष्य भी प्रकृति में दिखने वाली सुन्दरता से आकर्षित हुआ है। सदियों से मनुष्य फूलों, पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, पहाड़ों, नदियों, झरनों से आकर्षित हुआ है। बादलों के मौसम में मोरों का नाचना। आम के मौसम में कोयल की कूहु, कूहु। भोर समय (प्रातः काल) पक्षियों का चहचहाना, आसमान में उड़ते चहकते पक्षियों के झुंड, शान्त पहाड़ों में नदियों और झरनों की मनमोहक आवाज़ें मनुष्य के मन को भरपूर खुशी देती आई हैं। इस तरह मनुष्य की रचनात्मक विलक्षणता ने, इन बेअन्त प्राकृतिक कलाओं से सीखते, भाषाओं के रूप में अपनी भावनायें और कुदरत रचनाएं प्रकटाने की योग्यता और फिर इन को स्वरों और लय में बोलना सीखते, संगीत तक पहुँचने की सफलता प्राप्त की।

संसार के हर कोने में सदियों से इन कलाओं का वर्णन मिलता है। विशेष तौर से अपने प्राचीन ग्रन्थों में, वेद पुराणों में। संगीत की परिभाषा इस प्रकार है,

'सम्यक गीयते इति संगीतम्'

''सम्यक प्रकारणे यदि गीयते तत् संगीतम्''

यहाँ सम्यक अर्थात् योग, प्रकारणे भाव तरीके हैं। इस अनुसार योग और ठीक ढंग से गाने को संगीत कहा जाता है।

संगीत रत्नाकर में भी इस की परिभाषा इस प्रकार है,

''गीतं वाद्यं तथा नृत्य त्रयं संगीत्मुच्यते।''

अर्थात् गीत गाना, वाद्य बजाना और नृत्यं तीनों के समन्वय से संगीत है।

महान लेखक भाई कान सिंह नामा जी के महान् कोष अनुसार–संगीत–सं–गीत, नृत्य, गायन और बजाना, इन तीनों का समुदाय है।

इस प्रकार 'गीत' आवाज़ द्वारा शब्दों का प्रकटाना, अपनी भावनाओं को दर्शाना से बना है। इसको रोचक बनाने के लिए वाद्यों का विकास हुआ।

'नचण खेडन मन का चाऊ'

गाने, बजाने के साथ-साथ नृत्य द्वारा शारीरिक हाव-भाव द्वारा गीत के भावों को और रोचक और स्पष्ट बनाया गया।

इस प्रकार संगीतक कलाएँ तीन प्रकार की हैं।

गायन–अपनी भावनाओं के शब्दों को अपनी आवाज़ द्वारा प्रकट करने की कला को गायन कहते हैं।

वादन–किसी भी तरह के वाद्यों को बजा कर अपने भावों को प्रकट करने की कला को वादन कहा जाता है। यह शब्दों द्वारा नहीं बल्कि स्वरों की लय और ताल द्वारा किया जाता है।

नृत्य–अपनी शारीरिक मुद्राओं सहित मन के भावों को दर्शाने की कला को नृत्य कहा है। नृत्य ताल और लय में होता है। इस में स्वरों की सहायता भी ली जाती है।

संगीत के दो भाग होते हैं–

1. भाव संगीत–मन के भावों को प्रकट करके और जन साधारण को आसानी से समझ आ सकने वाले संगीत को भाव संगीत कहते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि संगीत शास्त्र के सभी नियमों का पालन किया जाए। लोकगीत, भजन, फिल्मी गीत, ब्याह शादी के गीत आदि भाव संगीत हैं।

2. शास्त्रीय संगीत–शास्त्रीय संगीत, संगीत शास्त्र के नियम अनुसार गाया बजाया जाता है। स्वर, लय, ताल और राग आदि में नियमों का पालन किया जाता है। संगीत का व्याकरण संगीत शास्त्र के अनुसार हो जाता है। फिर इस व्याकरण के नियमों की पूरी पालना की जाती है।

रागों द्वारा गुरुबाणी का संगीत शास्त्रीय संगीत है। व्यवहार में संगीत के भाग इस प्रकार हैं–

1. **सैद्धान्तिक संगीत**–सिद्धान्तों अनुसार संगीत के लिखित रूप को सैद्धान्तिक संगीत कहते हैं।
2. **क्रियात्मक संगीत**–गाने, बजाने और नृत्य द्वारा प्रदर्शित संगीत को क्रियात्मक संगीत कहते हैं।

(*ii*) ध्वनि

मनुष्य का मन कुदरती नज़ारे, झरने, पशु-पक्षियों की आवाज़ें, मोरों के नृत्यों को देख कर हमेशा आकर्षित हुआ है। इन अद्‌भुत दृश्यों को मनुष्य ने चित्रकला पक्षियों की आवाज़ें गा कर मोर के नृत्य को देख कर आप नृत्य करने लग पड़ा।

मनुष्य ने मधुर ध्वनियों की आवाज को सुना और सुरीले संगीत की रचना की। स्वयं गाने के साथ-साथ ध्वनियों को अलग-अलग वस्तुओं में से निकालने लगा। खुशी को प्रकट करने के लिए अपने शारीरिक अंगों के माध्यम से लय और ताल के साथ लहराने लगा। यही आगे चल कर गायन, वादन और नृत्य में विकसित हो गया।

लय, ताल की सहायता के साथ, मनुष्य कंठ अथवा वाद्य द्वारा अनेक ध्वनियों के उत्पन्न करने की कला को संगीत कहा गया। संगीत का आधार नाद है।

ध्वनि दो प्रकार की होती है। एक तो वह ध्वनि जो सुनने में मधुर हो वह संगीत उपयोगी होती है। दूसरी वह जो कर्कश, शोरगुल हो, उनको कोई भी सुनना पसंद नहीं करता, वह संगीत उपयोगी नहीं होती है। इनका संगीत में कोई स्थान नहीं होता। सुरीली ध्वनियाँ ही संगीत का आधार होती हैं।

ये निम्नलिखित हैं–

1. संगीत उपयोगी ध्वनि
2. संगीत अनुपयोगी ध्वनि

किसी भी आवाज़ की उत्पत्ति कम्पन या आन्दोलन होता है। टकराने से कम्पन होती है और आवाज़ पैदा होती है। तार को छेड़ने से कम्पन होता है। कम्पन बन्द होने से आवाज़ बन्द हो जाती है। इसको Vibration भी कहा जाता है। अगर आवाज़ में कम्पन कम या अधिक हो तो उसको अनियमित आन्दोलन कहा जाता है।

अगर आवाज़ नियमित होती है और मधुर होती है, वह संगीत के उपयोगी होती है वह आवाज़ जो बेसुरी कर्कश होती है वह संगीत के लिए उपयोगी नहीं होती। उस का संगीत में कोई स्थान नहीं है।

ध्वनि दो प्रकार की होती है–

1. अनाहत ध्वनि
2. आहत ध्वनि

अनाहत ध्वनि–बिना किसी चोट, रगड़ से पैदा हुई आवाज़ ध्वनि को अनाहत ध्वनि कहा जाता है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए ऋषि मुनि इस की उपासना करते थे। इसका आजकल प्रचलन नहीं है।

आहत ध्वनि–आहत का अर्थ है टकराना। सभी प्रकार के आपसी टकराने से पैदा हुई आवाज़ संगीत उपयोगी नहीं होती। किसी वस्तु के गिरने की आवाज़, बर्तनों की आपसी खड़कन की आवाज़ अनियमित आन्दोलन पैदा करती है। ये बेसुरी और कर्कश होती है। यह संगीत के लिए उपयोगी नहीं होती। संगीत का सम्बन्ध तो सिर्फ सुरीली ध्वनियों से होता है। अर्थात् नियमित आन्दोलन संख्या द्वारा पैदा हुई ध्वनियाँ ही संगीत के लिए सहायक होती हैं।

यह ध्वनियाँ तीन प्रकार की होती हैं–

1. एक वस्तु को दूसरी वस्तु से चोट मारने से जैसे–तबला, ढोल।
2. किसी वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ रगड़ने से जैसे–सारंगी, वायलिन।
3. किसी वस्तु में हवा के प्रवेश करने से जैसे हारमोनियम, बाँसुरी, शहनाई आदि।

(iii) अलंकार

अलंकार संस्कृत भाषा का शब्द है। जिस का अर्थ है सजाना जिस प्रकार एक स्त्री अपने आप को आभूषणों से सजाती है उसी प्रकार संगीत के आभूषण हैं जो राग (गीत) को सजाते है।

अलंकार में स्वर समूह नियमित क्रम में होते हैं। पण्डित अहोबल जी के अनुसार, ''क्रमानुसार स्वर समूह जो अच्छी तरह गुंथा हो, अलंकार कहलाता है।''

संगीत रत्नाकर पंडित शारंग देव जी के अनुसार, ''वर्णों में रची गई स्वरों की विशेष रचना को अलंकार कहते हैं।''

पण्डित विवेक साहनी जी कहते हैं, स्वरों की ऐसी सुन्दर और विशेष लयबद्ध स्वर रचना जो उसी क्रम में गाई, बजाई जाए, अलंकार कहलाती है।

अलंकार के दो भेद होते हैं–

1. आरोह
2. अवरोह

अलंकार की जो व्यवस्था आरोह में होती है वही अवरोह में होती है। जैसे–

स रे ग म प ध नी सं–आरोह

सं नी ध प म ग रे स–अवरोह

अलंकार की रचना विधि–अलंकारों में स्वरों को विशेष नियम में रखा जाता है, अनेकों अलंकारों की रचना की जाती है।

वह विशेष 'स' स्वर रचना जो, लयबद्ध हो और आरोह, अवरोह में रची हो।

अलंकार मध्यम 'स' से शुरू करके तार सप्तक के 'सं' तक बोला जाता है और मुड़ तार सप्तक के 'सं' से मध्यम 'स' तक आना होता है।

अलंकार में शुद्ध या कोमल कोई भी स्वर प्रयोग किया जाता है।

अलंकारों के लाभ : इन से स्वर ज्ञान और लय ज्ञान होता है।

(*i*) गायन में गले की तैयारी लाभदायक सिद्ध होती है।

(*ii*) इन से कल्पना शक्ति बढ़ती है।

(*iii*) भिन्न-भिन्न लयकारियों का अभ्यास सरल हो जाता है।

(*iv*) इनसे राग को सजाने में सहायता मिलती है।

(*v*) सुन्दर, तान, तोड़े के साथ राग में अद्‌भुत प्रभाव उत्पन्न होता है।

(*vi*) अलंकारों के अभ्यास से सितार पर उँगलियों की तैयारी अच्छी तरह हो जाती है।

(*iv*) ताल

ताल–संगीत में एक समान गति को लय कहते हैं। घड़ी की टिक-टिक, मनुष्य के दिल की धड़कन, एक समान गति में चलना सभी लय के ही उदाहरण हैं। लय के एक कायम किए निश्चित किए गए भाग को ताल कहते हैं। ताल शब्द 'तल' धातु से बना है जिस का अर्थ है, प्रतिष्ठा को प्राप्त करना।

अमरकोष में ताल बारे कहा गया है–

'ताल, काल क्रियामानम्'

अर्थात् ताल समय को मापने का साधन है। इस प्रकार संगीत में गाने बजाने में जो समय लगता है उसके मापने के साधन को ही ताल का नाम दिया गया है (जिस प्रकार लम्बाई को मीटर में, समय को मिनट सैकिंड में और भार को किलोग्राम ग्राम में मापा जाता है, उसी प्रकार संगीत में गाने बजाने के समय को मापने के लिए ताल एक मापक यन्त्र के तौर पर काम करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संगीत में गायन, वादन और नृत्य के समय मापने के पैमाने को ताल कहते हैं।

अलग-अलग तालों के समूह से भिन्न-भिन्न तालों की उत्पत्ति होती है। इन तालों को तबला, मृदंग आदि वाद्यों पर बजाया जाता है। प्रत्येक ताल के निश्चित बोल, ताली खाली,

विभाग और निश्चित मात्राएँ होती हैं जैसे आठ मात्राओं का वाहरवां ताल, दस मात्रा का झपताल, 12 मात्रा का एक ताल, सोलह मात्रा का तीन ताल आदि। तालों का निर्माण गायन शैली या वादन शैली के आधार पर हुआ है। जैसे ध्रुपद गायन के साथ चार ताल, सितार की गतों के साथ तीन ताल, एकताल, झपताल, ख्याल शैली के साथ एक ताल, तीन ताल, झपताल, ठुमरी गायन के साथ दीप चन्दी ताल आदि।

ताल का महत्त्व–ताल के महत्त्व के संबंध में पंडित शारंग देव ने 'संगीत रत्नाकर' ग्रन्थ में लिखा है–

गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठिम।

अर्थात् गायन, वादन और नृत्य तीनों की जान माना गया है। यदि इन में से ताल को निकाल दिया जाए तो बेजान शरीर समान हो जाएगा। ताल बिना गाना बजाना नीरस लगता है। ताल के साथ संगीत प्रभावशाली लगता है।

पंडित भात खण्डे जी लिखते हैं कि संगीत के विद्यार्थियों को स्वर से पहले ताल का ज्ञान देना चाहिए। संगीत का मुख्य उद्देश्य आनन्द प्राप्त करवाना ही होता है। ताल के साथ संगीत में रस की बढ़ोतरी होती है।

ताल एक संगीतकार को मर्यादा में बाँध कर रखता है। ताल के अलग-अलग बोल, मात्राएँ, ताली खाली की सहायता से संगीतकार को पता लगता रहता है कि वह कहाँ और किस मात्रा पर है। इस प्रकार ताल संगीतकार को नियन्त्रण में रखती है।

(*v*) झाला

झाला–सितार और सरोद वाद्यों पर बजाने की एक क्रिया का नाम है। रज़ाखानी गत के तोड़े बजाने के बाद द्रुत लय में झाले का वादन किया जाता है। झाले में मुख्यत: मन्द्र सप्तक के 'म' बाज़ के और तार सप्तक के 'स' से मिलाये गये चिकारी के तार प्रयोग किया जाता है। बाज के तार पर मिज़राब के साथ 'दा' बोल बजा कर चिकारी के तार पर 'रा' बजा कर द्रुत लय में झाले का वादन किया जाता है। इस में बाज और चिकारी पर एक समान लय में आवाज़ को बिना तोड़े प्रहार कर दा रा रा रा आदि स्वर जाए जाते हैं। झाला बजाने से एक रोमांचित वातावरण पैदा हो जाता है। झाला बजाते समय आनन्द की चरम सीमा होती है। इस में एक वादक के हाथ की तैयारी दिखाई देती है। इसके साथ ही उसका ताल पर अधिकार का भी पता चलता है। झाले को मींड कृंतन, जमजमा आदि क्रियाओं से सजाया जाता है। झाले के अन्त में तिहाई लगा कर समाप्ति की जाती है।

झाला दो प्रकार का होता है–

1. सुलट झाला   2. उलट झाला

1. **सुलट झाला**–सुलट झाले को सीधा झाला भी कहा जाता है। इस प्रकार के झाले में मिज़राब के प्रहार के साथ बाज की तार पर 'दा' बोल बजाते हैं और फिर चिकारी की तार पर 'रा' बोल बजाया जाता है। इसके साथ दा रा रा रा, दा रा रा रा की ध्वनि उत्पन्न होती है।

2. **उलट झाला**–इस प्रकार के झाले में पहले चिकारी के तार पर मिज़राब से 'रा' बोल बजाया जाता है फिर बाज़ के तार पर 'दा' बोल बजाया जाता है। इसे उलटा झाला कहते हैं। इसके साथ रा, दा रा रा, रा दा रा रा बोल उत्पन्न होते हैं।

मिज़राब के बोलों में बदल-बदल कर आठ-आठ मात्राओं के कई प्रकार के झाले बनाए जाते हैं जैसे दा रा रा रा, दा रा रा रा, दा रा दा दा रा, दा दा रा, दा दा रा रा दा दा रा रा, दा रा रा दा रा रा दा रा आदि।

संगीत के प्रारम्भिक विद्यार्थियों को झाले की तैयारी पहले मध्य लय में करनी चाहिए ताकि स्वरों का स्पष्ट उच्चारण हो। मध्यलय में झाले का अभ्यास के बाद ही द्रुत लय में अभ्यास करना चाहिए।

(*vi*) आरोह

आरोह का अर्थ है, चढ़ता क्रम, अर्थात् स्वरों के चढ़ते क्रम को आरोह कहा जाता है जैसे- स रे ग म प ध नी सं

गायक वादक गाते बजाते हुए किसी विशेष पर नहीं ठहरते बल्कि ऊपर नीचे होते रहते हैं। आरोह हमेशा मध्य सप्तक के स से तार सप्तक के सं तक होता है। आरोह की परिभाषा इस प्रकार है–''गायन या वादन करते समय लगातार आवाज़ ऊँची होती जाए उसे आरोह कहा जाता है।''

(*vii*) अवरोह

स्वरों के ऊपर से नीचे उतरते हुए क्रम को अवरोह कहते हैं जैसे सं नी ध प म ग रे स।

अवरोह से राग में लगने वाले स्वरों की जानकारी मिलती है और आरोह-अवरोह से राग की जाति निश्चित की जाती है। राग की चलन के साथ ही आरोह-अवरोह निश्चित होते है।

अवरोह की परिभाषा इस प्रकार है, ''जब कलाकार आरोह की उल्टी दिशा गायन या वादन करता है। तब संगीत की भाषा में इसे अवरोह कहते हैं।

एक और परिभाषा अनुसार, ''ऊँची आवाज़ से नीची आवाज़ की तरफ गाने बजाने की क्रिया को अवरोह कहा जाता है। यह आवश्यक नहीं कि इस में सात ही स्वर लगें। राग के स्वरों अनुसार आरोह-अवरोह होते हैं जैसे-राग भुपाली में 5 स्वर लगते हैं इस राग के आरोह-अवरोह इस प्रकार हैं-

स रे ग प ध सं - अरोह

सं ध प ग रे स - अवरोह

(*viii*) पकड़

राग में लगने वाला वह छोटा-सा विशेष स्वर समूह जिससे राग की पहचान एक दम से हो जाए, पकड़ कहलाता है। राग के आरोह अवरोह के बाद पकड़ गाई जाती है। पकड़ से वादी-सम्वादी स्वरों की पहचान हो जाती है। राग की चाल कैसी है, किन स्वरों पर ठहराव किया है, पकड़ से पता चलता है।

हर राग की पकड़ अलग-अलग होती है। राग को गाते बजाते हुए पकड़ के विशेष स्वर समूह को बार-बार प्रयोग में लिया जाता है। जिससे राग का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है-

राग भैरव की पकड़

ग म ध ऽ ध ऽ प, ग म रे ऽ रे ऽ स

कलिंगड़ा की पकड़

ध प, ग म ग, रे स

राग की पकड़ के साथ राग का स्वरूप दिमाग में बैठ जाता है। राग के स्वरूप की शुद्धता को स्थिर रखने के लिए पकड़ को याद करना ज़रूरी है। अगर कभी आलाप लेते हुए राग से हट जाने लगे तो पकड़ लेकर एक दम राग का शुद्ध रूप स्थिर हो जाता है।

(*ix*) आलाप

वादक किसी भी राग की गत बजाने से पहले उस राग में लगने वाले स्वरों का थोड़ा-सा स्वरूप दिखाता है तो उसे आलाप कहते हैं। यह स्वरूप सरगम में भी हो सकता है और आकार में भी हो सकता है।

राग का सारा ढांचा राग के आलाप में ही नज़र आ जाता है। मन्द्र सप्तक से तार सप्तक तक धीरे-धीरे बढ़त करते हुए स्वर-विस्तार किया जाता है तो वह आलाप कहलाता है। गम्भीर प्रकृति का होने के कारण इसकी गति विलम्बित होती है।

पण्डित भात खण्डे जी के अनुसार, ''हमारे गायक/वादक कोई भी गीत / गत, गाने / बजाने से पहले उस राग वाले राग-स्वरूप का थोड़ा-सा दिग्दर्शन करवाते हैं तो वह आलाप कहलाता है।''

श्रीमती महारानी शर्मा के अनुसार, आलाप गायन / वादन की क्रिया असल में राग प्रकट होने से पहले की तैयारी है। जिससे राग का पूर्व आभास उस स्वर विस्तार से हो जाता है।

आलाप राग के विस्तार करने का एक साधन है। राग की गत से पहले राग में लगने वाले स्वरों से राग का स्वरूप स्पष्ट आलाप कहलाता है।

आलाप–आलाप बजाने या प्रस्तुत करने का प्रत्येक वादक का अपना-अपना ढंग होता है। वादन में आलाप चार प्रकार का होता है–

1. मन्द का आलाप
2. मध्यालाप
3. जोड़-आलाप
4. द्रुतालाप

1. **मन्दलाप–**यह खास कर मध्य स से शुरू किया जाता है और एक दो स्वर को बार-बार बजा कर बाकी स्वरों को जोड़ते हुए आगे बढ़ते हैं और राग के रूप को स्पष्ट करते हैं। इस आलाप में स्वरों के स्थान की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वादन के आलाप का एक मुखड़ा होता है जिससे आलाप का सम कहते हैं यह आलाप के हर टुकड़े के पूरे होने पर बजाया जाता है जैसे नी नी रे स।
2. **मध्यालाप–**मन्द आलाप के बाद आलाप की गति (लय) थोड़ी-सी बढ़ा दी जाती है। इस आलाप की लय लगभग डेढ़ गुणा अधिक होती है। यह छोटे-छोटे स्वर समूहों से स्वरों का विस्तार किया जाता है। इस में जोड़े बना कर बजाए जाते हैं जैसे-नीध, नीघ सनी रेस।
3. **जोड़-आलाप–**जोड़ आलाप में और अधिक लय बढ़ा दी जाती है। इस की गति मन्द आलाप से लगभग दुगुनी होती है। इस में स्वरों के लम्बे-लम्बे आवर्त्तन बनाए जाते हैं। आलाप के इस भाग में राग का चलन दिखाया जाता है और दुगुन में दारा दारा बोल बजाए जाते हैं जोड़ों की समाप्ति पर आलाप का सम दिखाया जाता है।
4. **द्रुतालाप–**जोड़ आलाप के पूरा होने पर और लय बढ़ाई जाती है और इस में मिज़राव के साथ ठोंक झाला बजाते है। किसी भी स्वर को बजाते हुए मिजराव के साथ सितार के तार पर चोट इतनी जोर से बजाई जाती हैं कि तबले पर भी चोट हो उसे ठोंक बजाना कहते हैं। प्रत्येक लय का झाला समाप्त करके आलाप का सम उस से आधीलय में बजाया जाता है। अन्त में चौगुन के तोड़े कर आलाप के सम पर आलाप समाप्त कर दिया जाता है। इस भाग में लय को मुख्य रखा जाता है।

(x) तोड़ा

सितार, सरोद और वीणा आदि वाद्यों पर राग का विस्तार करने की क्रिया का नाम तोड़ा है। जैसे गायन में द्रुत स्वर समूहों के गाने को तान कहा जाता है उसी प्रकार सितार पर द्रुत गति में बजाए जाने पर समूहों को तोड़ा कहा जाता है। इस तरह तोड़ा राग विस्तार करने का एक साधन है।

सितार वादन में रज़ाखानी और मसीतखानी गतों में तोड़े बजाए जाते हैं। तोड़े किसी भी मात्रा से शुरू किए जा सकते हैं, फिर मुड़ गत के मुखड़े में मिला जाता है। तोड़े एक आवर्त्तन से लेकर कई आर्वत्तनों के होते हैं। रज़ाखानी गत में दुगुन के तोड़े बजाए मसीत गत में दुगुन, छः गुण, आठ गुण आदि लयकारियों के तोड़े बजाए जाते हैं। तोड़ों से एक वादक की हाथ की तैयारी के साथ-साथ बुद्धि के चमत्कार और ताल ज्ञान का भी पता चलता है। तोड़े बजाते समय स्वरों का स्पष्ट वादन बहुत ज़रूरी है। इससे वादन में मिठास आती हैं। तोड़े कई प्रकार के होते हैं–

1. **बराबर का तोड़ा**–जिस लय में गत बज रही हो उसी लय में यदि तोड़ा बजाया जाए, उसे बराबर का तोड़ा कहा जाता है।
2. **दुगुन का तोड़ा**–जिस लय में गत बज रही हो, उससे दुगुनी लय में तोड़ा बजाया जाए तो उसे दुगुन का तोड़ा कहते हैं। रज़ाखानी गत में दुगुन के तोड़े बजाए जाते हैं।
3. **चौगुन का तोड़ा**–गत से चौगनी लय में तोड़ा बजाने को चौगुन का तोड़ा कहा जाता है, अर्थात् तोड़े की लय गत से चार गुना तेज़ होती है। मसीतखानी गत में चौगुन के तोड़े होते हैं।
4. **आठ गुन का तोड़ा**–गत से आठ गुना तेज़ लय में तोड़ा बजाने को अठगुन का तोड़ा कहा जाता है अर्थात् एक मात्रा में आठ अंक आते हैं।

इनके अतिरिक्त छः गुन, सात गुन आदि लयकारियाँ के तोड़े भी बजाए जाते हैं। कुशल कलाकार एक ही तोड़े में अलग-अलग लयकारियाँ दिखा कर भी तोड़े बजाते हैं। जैसे छः गुन, सात गुन की लयकारी का इकट्ठा तोड़ा या सात गुन आठ गुन का इकट्ठा तोड़ा। आरम्भ में विद्यार्थियों को बराबर की लय में तोड़े बजाकर अभ्यास करना चाहिए ताकि स्वरों का स्पष्ट उच्चारण हो सके।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. संगीत के अंगों के नाम बताओ।
2. ध्वनि की परिभाषा लिखो।
3. तोड़े कब बजाए जाते हैं?
4. मसीतखानी गत में किस लय के तोड़े बजाए जाते हैं ?
5. अलंकार का कोई एक लाभ बताओ।
6. झाला किस वाद्य पर बजाया जाता है ?
7. संगीत में समय मापने का कौन-सा साधन है?
8. झाला कब बजाया जाता है ?
9. झाले की किस्मों के नाम बताओ ।
10. स्वरों के निचले क्रम से ऊपरी क्रम तक जाने को क्या कहते हैं ?
11. राग के खास (विशेष) स्वर समूह को क्या कहते हैं ?
12. राग का आरम्भ कहाँ से शुरू करते हैं।

अध्यापक के लिए

अध्यापक विद्यार्थियों को अलंकार बजाने सिखाएँ और झाले के प्रकार की जानकारी सितार पर बजा कर सिखाएँ।

पाठ 2

मिज़राब के भिन्न बोल :

आकर्ष प्रहार और अपकर्ष प्रहार

सितार वाद्य को बजाने के लिए त्रिकोणी अगूँठीनुमा यंत्र का प्रयोग किया जाता है जिसे हम मिज़राब कहते हैं। यह लोहे या पीतल के तार जो कुछ मोटा हो, की बनी हुई अँगुठी की तरह होती है। सितार बजाने लिए इसे दाएँ हाथ की तर्जनी उँगली पर पहनी जाती है। मिज़राब के अगले त्रिकोने भाग का प्रयोग तार पर प्रहार करने के लिए किया जाता है। मिज़राब हमेशा उँगली के नाप की ही पहननी चाहिए। बहुत ढीली और लम्बी मिज़राब सितार वादन में अड़चन डालती है।

सितार वादन में मिज़राब के बोलों का बहुत महत्त्व होता है। मिज़राब के प्रहार से ही सितार में ध्वनि पैदा होती है इसलिए सितार पर प्रहार ज़ोरदार तरीके से करना चाहिए। इस के साथ प्रहार करते समय स्वरों का वादन स्पष्ट सुनाई देना चाहिए। मिज़राब का प्रहार करते समय हाथ की उँगलियों को इकट्ठा करके प्रहार करना चाहिए। सितार पर मिज़राब के साथ दो प्रकार का प्रहार किया जाता है।

1. आकर्ष प्रहार
2. अपकर्ष प्रहार

1. **आकर्ष प्रहार**–मिज़राब द्वारा बाहर से अन्दर की तरफ किए गए प्रहार को आकर्ष प्रहार कहते हैं। अर्थात् जब मिज़राब से तार पर सीधी चोट लगाई जाती है तो उसे आकर्ष प्रहार कहते हैं। इस से 'दा' बोल की उत्पत्ति होती है।

2. **अपकर्ष प्रहार**–मिज़राब द्वारा अन्दर से बाहर की ओर किए गए प्रहार को अपकर्ष प्रहार कहते हैं अर्थात् मिज़राब से तार पर उल्टी चोट (आघात) लगाने को अपकर्ष प्रहार कहते हैं। इसे 'रा' बोल की उत्पत्ति होती है।

सितार पर आकर्ष और अपकर्ष की सहायता से 'दा' और 'र' बोलों द्वारा कई और तरह के शब्द (बोल) बजाए जाते हैं इनका वर्णन इस प्रकार है–

दिर–'दा' और 'र' को इकट्ठा बजाने से 'दिर' बोल की उत्पत्ति होती है।

द्रा–'दा' बोल को जल्दी और 'र' बोल को पूरे ज़ोर से बजाने पर 'द्रा' बोल उत्पन्न होता है।

रदा–इसमें 'र' बोल को कम समय के लिए और 'द' बोल को पूरा ज़ोर से बजाने से 'रदा' बोल उत्पन्न होता है।

दार–'दा' बोल एक मात्रा में और 'र' आधी मात्रा में बजाने से 'दार' बोल पैदा होता है। यह बोल–डेढ़ (1½) मात्रा में बजता है।

विद्यार्थियों को पहले पहल 'दा' और 'रा' बोल–बजाने का अभ्यास करना चाहिए। इसके बाद ही बाकी बोलों को बजाना सीखना चाहिए।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सितार को किस चीज़ से बजाया जाता है ?
2. मिज़राब किस उँगली में पहनी जाती है ?
3. सितार पर कौन–कौन से प्रहार किए जाते हैं ?
4. सितार पर मिज़राब से सीधे प्रहार को क्या कहते हैं ?
5. 'दिर' बोल कैसे बजाया जाता है?
6. 'दार' बोल कितनी मात्रा में बजता है ?

अध्यापक के लिए

अध्यापक विद्यार्थियों को सितार पर आकर्ष और अपकर्ष प्रहार बजाकर दिखाए।

पाठ 3

वादी स्वर, सम्वादी स्वर, अनुवादी स्वर, विवादी स्वर, वर्जित स्वर

जिस प्रकार राज्य में राजा, मन्त्री, प्रजा, शत्रु और स्कूल में प्रिंसीपल, वाईस प्रिंसीपल, अध्यापक और मुख्य महमान की भूमिका होती है। उसी प्रकार राग में वादी स्वर, सम्वादी स्वर, अनुवादी स्वर, विवादी स्वर अपनी मुख्य भूमिका निभाते हैं।

राग में चार प्रकार के स्वर होते हैं। राग का सारा स्वरूप उन पर निर्भर करता है। वादी स्वर राजा या यूँ कहें कि मुख्याध्यापक का रोल अदा करता है जिन पर सारे राज्य का दारोमदार टिका हुआ है उसी प्रकार राग में वादी स्वर बहुत बड़ा रोल अदा करता है इस का प्रयोग राग में बार-बार होता है। यह राग का सबसे महत्त्वपूर्ण स्वर होता है। वादी स्वर के बाद जो स्वर अधिक प्रयोग में आता है वह है सम्वादी स्वर। इसे मन्त्री या वाईस प्रिंसीपल भी कह सकते हैं क्योंकि राग में यह स्वर मन्त्री या वाईसप्रिंसीपल की तरह जिम्मेदारी निभाते हैं। यह स्वर वादी स्वर से कम बाकी स्वरों से अधिक प्रयोग में आता है। राग में लगने वाले तीसरे स्वर को अनुवादी स्वर कहा जाता है। इसे हम स्कूल में अध्यापक या राज्य में प्रजा की तरह सहायता करने वाले कह सकते हैं। चौथा स्वर विवादी कहलाता है। इस स्वर को दुश्मन या शत्रु के नाम से जाना जाता है। पर यदि राज्य में इस का प्रयोग कम और सूझबूझ से हो तो यह दुश्मन नहीं अपितु यह सहायक के रूप में बहुत बड़ा योगदान डालने में सहायता होता हैं। आचार्य बृहस्पति जी के अनुसार, ''वादी सम्वादी, अनुवादी और विवादी किसी भी धुन, राग या जाति में प्रयुक्त विभिन्न स्वर इन चार श्रेणियों में बाँटे जाएँ तो यह रंजकता पैदा कर सकते हैं।''

वादी स्वर

राग में लगने वाले स्वरों का प्रयोग अलग-अलग होता है। योजना अनुसार किसी स्वर का प्रयोग कम या अधिक हो सकता है जो राग में सुन्दरता के लिए ज़रूरी है। राग में जिस स्वर

का प्रयोग अधिक से अधिक किया जाता है वह स्वर राग का वादी स्वर कहलाता है। सारे राग प्रदर्शन के समय यह स्वर अपना स्थान बनाए रखता है। यह स्वर राग का प्राण भी कहा जा सकता है या अधिक बोलने वाले को भी वादी स्वर कहा जा सकता है। अनेक संगीतकारों ने इस की कई परिभाषाएँ दी हैं। पण्डित भातखण्डे अनुसार ''जो स्वर राग को अधिक उजागर करे उसे वादी स्वर कहते हैं।''

राग में जिस स्वर का बार-बार प्रयोग हो, उस पर अधिक ठहराव किया जाए। उसे वादी स्वर कहते हैं।

प्राचीन राग पद्धति अनुसार इस स्वर को 'अंश' स्वर कहा जाता था। जो स्वर राग में दूसरे स्वरों से अधिक प्रयोग किया जाए या जिस से राग का स्वरूप पूर्ण रूप से प्रकट हों उसे वादी स्वर कहा जाता है। इस स्वर पर राग की सारी सुन्दरता और शोभा टिकी होती है। भरतमुनि के अनुसार, ''राग में वादी स्वर की प्रधानता होने के कारण या अधिक ठहराव करके राग उसी स्वर से शुरू औ समाप्त कारण राग के मुख्य हिस्सों में उसे बार-बार, अलग-अलग ढंगों से दिखाने में यह अधिक भूमिका निभाता है।

यदि दो राग आपस में समान हों पर वादी, सम्वादी भिन्न होने से राग भिन्न हो जाता हैं। जैसे-राग भुपाली और देश कर, राग भैरव और कलिंगड़ा आपको वादी स्वर राग के गाने का समय भी निश्चित हो जाता है।

सम्वादी स्वर

जिस प्रकार एक राजा को मदद के लिए मंत्री की ज़रूरत होती है उसी प्रकार राग में सम्वादी स्वर की आवश्यकता होती है ऐसे ही स्कूल में प्रिंसीपल के बाद वाईस प्रिंसीपल की अहमियत होती है। सम्वादी स्वर वादी स्वर को छोड़ कर बाकी राग में लगने वाले सभी स्वरों से अधिक महत्त्व रखता है। वादी सम्वादी दोनों गाए-बजाए जाएँ तो रंजकता पैदा करते हैं।

वादी सम्वादी स्वर में कम से कम चार या पाँच स्वरों का अन्तर होता है। यदि 'स' स्वर वादी हैं तो सम्वादी 'प' होगा। यह सम्वाद इस प्रकार होगा-स-म, स-प, ग-ध, रे-प।

यदि किसी राग में 'प' स्वर वर्जित है तो वादी से चौथा स्वर सम्वादी 'म' होगा। आचार्य बृहस्पति जी के अनुसार-''किसी एक स्वर के वादी होने पर सम्वादी अपने आप मिल जाएगा। इसी के साथ ही राग की सारी सुन्दरता खिल जाती है।''

यदि यह कह लें कि राग के स्वर विस्तार को ठीक रखने के लिए वादी सम्वादी की स्थापना की जाती है तो यह कहना गलत नहीं होगा, कि सप्तक के पूर्वांग में वादी स्वर है तो उत्तरांग भाग में उसका सम्वादी स्वर विद्यमान होगा। जैसे भैरव राग का वादी स्वर 'ध' उत्तरांग

में है तो 'रे' पूर्वांग में है। इस प्रकार भुपाली राग का वादी स्वर 'ग' है जो पूर्वांग में है और सम्वादी स्वर 'ध' है जो उत्तरांग में है।

अनुवादी स्वर

यह शब्द अनु + वादी के मेल से बना है जो स्वर वादी स्वर का अनुसरण करता है वह स्वर अनुवादी कहलाता है।

राग रूपी राज्य में यदि वादी स्वर राजा, सम्वादी स्वर मन्त्री तो बाकी स्वर प्रजा कहे जाएँगे। दूसरे शब्दों में वादी स्वर प्रिंसीपल, सम्वादी स्वर वाईस प्रिंसीपल और अनुवादी स्वर स्कूल में दूसरे अध्यापकों का रोल अदा करते हैं। प्रत्येक एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं और अपना-अपना काम ब-खूबी से निभाते हैं।

शास्त्रकारों के अनुसार–वादी, सम्वादी स्वरों को छोड़ कर बाकी बचे स्वरों को अनुवादी स्वर कहा जाता है।

जहाँ वादी सम्वादी स्वर राग में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं वही अनुवादी स्वरों के बिना राग की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राग की रूप रेखा स्पष्टीकरण और सुन्दरता अनुवादी स्वरों पर निर्भर करती है यह स्वर राग की शोभा बढ़ाते हैं।

राग भुपाली में ग वादी ध सम्वादी हैं। और स रे प अनुवादी स्वर हैं। यह स्वर राग की सुन्दरता को उजागर करते है और राग को सही स्वरूप देते हैं।

विवादी स्वर

वह स्वर जो राग में प्रयोग नहीं किए जाते उनको विवादी स्वर कहते है।

स्वरों के आपसी तालमेल से रस की उत्पत्ति होती है और कानों को मधुर लगती है। विवादी स्वरों के विशेष प्रयोग से सुन्दरता उत्पन्न की जाती है। पर इस में विशेष कुशलता की आवश्यकता होती है। थोड़ी-सी असावधानी राग के स्वरूप को बिगाड़ कर रख सकती है। थोड़ा सावधानी से प्रयोग करने में राग में विशेष आकर्षण पैदा होता है। इसका प्रयोग बार-बार न करके सूक्ष्म रूप ही राग की शोभा को चार चाँद लगाने में कारगर सिद्ध होता हैं। जिस तरह बिहाग में तीव्र 'मे' का प्रयोग आजकल विवादी स्वर के रूप में हो रहा है।

इस स्वर को दुश्मन (शत्रु) की उपमा भी दी गई है। राग भैरव में शुद्ध रे, ग का प्रयोग सुन्दरता बढ़ाने के लिए किया जाता है। कुशलतापूर्वक यदि राग की रंजकता बढ़ती हो तो ही इसका प्रयोग उचित माना जाता है।

राग विबोध अनुसार, ''वर्जित स्वर उन गीतों में सुन्दरता समाप्त नहीं करता पर थोड़ा-सा वाण रूप में उस स्वर को जल्दी लिया जाए।''

वर्जित स्वर

जो स्वर राग में बिल्कुल ही प्रयोग नहीं होते उन्हें वर्जित स्वर कहते हैं। इन स्वरों के साथ ही राग की जाति निर्धारित होती है। राग में कम-से-कम पाँच स्वर और अधिक से अधिक सात होने ज़रूरी हैं। इससे सिद्ध होता है कि दो स्वरों से ज्यादा स्वर राग में वर्जित नहीं हो सकते। कुछ स्वर आरोह में, कुछ अवरोह में प्रयोग नहीं होते जिससे राग की जाति बनती है। राग भुपाली में 'म', 'नी' वर्जित है। मालकौंस में रे, प वर्जित स्वर है।

राग में 'स' स्वर कभी वर्जित नहीं होता। म और प दोनों इकट्ठे वर्जित नहीं हो सकते। एक वर्जित स्वर होने से षाड्व और दो स्वर वर्जित होने से औढ़व जाति का राग बन जाता है।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. वादी स्वर को और किस नाम से जाना जाता है ?
2. राग में सबसे अधिक प्रयोग होने वाले स्वर को क्या कहते हैं ?
3. सम्वादी स्वर से क्या भाव है ?
4. वादी स्वर से सम्वादी स्वर कौन-से स्वर पर होता है ?
5. अनुवादी स्वर को और कौन-से नाम से जाना जाता है ?
6. विवादी स्वर से क्या भाव है ?
7. जिन स्वरों का राग में प्रयोग करने की मनाही हो उन स्वरों को किस नाम से जाना जाता है।
8. राग का समय निश्चित करने में कौन-सा स्वर सहायक होता है?

अध्यापक के लिए

अध्यापक विद्यार्थियों को आम जीवन में से उदाहरणों से स्वरों की किस्मों के बारे में जानकारी देना।

✱✱✱✱✱

पाठ 4

जीवनी-

(i) पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे

चित्र : पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे

19वीं सदी में संगीत की हालत बहुत नाजुक थी। संगीतकारों का समाज में कोई स्थान नहीं माना जाता था। उन्हें आदर की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। संगीत केवल वैश्यवृत्ति तक या फिर घरानों तक ही सीमित था। इसलिए साधारण लोग इस कला को घटिया लोगों की कला समझने लगे थे। इस नफरत के कुएँ में पड़े भारतीय संगीत को बाहर निकालने और ऊँचे स्तर पर लाने का श्रेय पण्डित विष्णु नारायण जी को ही जाता है। इन की बदौलत आज विद्यार्थी संगीत को एक विषय के रूप में स्कूलों, कॉलेजों, विश्व-विद्यालयों में लिखित और प्रयोगी रूप में पढ़ रहे हैं। यहीं तक सीमित नहीं इन्हीं के कारण आज प्रसिद्ध संगीतकार, अध्यापक, प्रोफ़ैसर तैयार हो रहे हैं।

जन्म और शिक्षा–इस महान संगीत सुधारक, शास्त्रकार और संगीत प्रचारक का जन्म 10 अगस्त 1860 ई० को जन्म अष्टमी के दिन महाराष्ट्र के बालकेश्वर प्रान्त में एक गरीब

परन्तु उच्च ब्राह्मण परिवार में हुआ। इन के पिता वाद्य-वृन्द और माता गायकी में निपुण थे। इसलिए इन का संगीत कशिश, रुचि बचपन से ही थी। परन्तु बदकिस्मती से बचपन में ही इनके पिता की मृत्यु के कारण वह अपने पिता से ज़्यादा संगीत न सीख सके। स्कूल और कॉलेज की शिक्षा के साथ इन्होंने संगीत की भी शिक्षा ली। इनकी मधुर आवाज़ प्रकृति की देन थी। इसलिए विद्यार्थी जीवन में बहुत सारे इनाम प्राप्त किए। सन् 1890 ई० में पण्डित जी एल० एल० बी० की शिक्षा प्राप्त करने के बाद कराची में वकालत करने के लिए चले गए। परन्तु वकालत में सफलता न मिलने के कारण बम्बई वापिस आ गए। यदि उनको किसी गुरु का शिष्य बनना पड़ा तो वे बने। यदि किसी संगीतकार की तन-मन से सेवा करनी पड़ी, वह भी की। इतनी कठिन तपस्या के बाद उन्होंने भिन्न-भिन्न उस्तादों, गायकों कलाकारों से भिन्न-भिन्न रागों का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने तराना, धमार, ध्रुपद की और ख्यालों की बन्दिशें इक्ट्ठी कीं, जिन रागों की रचनाएँ नहीं मिलीं। उन बन्दिशों को आप ने 'चतुर-पण्डित' के उपनाम से स्वरबद्ध करके उनकी स्वरलिपियाँ तैयार कीं।

भातखण्डे जी के काम

1. भातखण्डे स्वर लिपि–अपने गीतों की स्वर लिपि लिखने के लिए एक सरल और आसान विधि तैयार की जिसे भातखण्डे जी स्वर लिपि कहते हैं। उत्तरी भारत में यह बहुत प्रचार में है।

2. संगीत को हरमन (लोकप्रिय) बनाना–पण्डित जी ने संगीत को लोकप्रिय बनाया। यह महान काम करके जनसाधारण में इस विषय प्रति रुचि लगन पैदा करने का एक विशाल वृक्ष लगाया। संगीत में रुचि पैदा करने के लिए संगीत का प्रयास किया।

3. संगीत पुस्तकें–पण्डित जी ने सारे भारत का भ्रमण कर जो सामने संगीतकारों से प्राप्त की, फलस्वरूप कई पुस्तकें छपवाई। ''हिन्दोस्तान संगीत पद्धति (चार भाग) इस में संगीत शास्त्र की चर्चा की गई है। क्रमिक पुस्तक मालिका (छः भाग) जिस में सैंकड़ों परम्परागत ध्रुपद, धमार, तराने एवं ख्याल लिखे गए हैं। अभिनव राग मन्जरी आपने इस संगीत पुस्तकों में 'चतुर पण्डित' की उपमा निम्न रचनाएं में लिखीं। कुछ संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में किया। आज के संगीतकारों को पुरातन संगीत के गौरव प्रति जानकार करवाया।''

4. संगीत शिक्षा और शिक्षा प्रणाली शुरू करवाई–पण्डित जी ने अपनी संगीत शिक्षा प्रणाली शुरू करवाई। विद्यार्थियों के लिए स्कूल, कॉलेजों तक प्रणाली का काम शुरू करवा कर संगीत-जगत को एक नई दिशा दी।

5. संगीत विद्यालय की स्थापना–पण्डित जी की मेहनत और लगन कारण मैरिस कॉलेज ऑफ मियूज़िक लखनऊ, माधव संगीत विद्यालय ग्वालियर, मियूज़िक कॉलेज बड़ौदा में संगीत विद्यालय की स्थापना करवाई। जिससे संगीत कला का प्रचार और प्रसार बहुत हुआ।

6. थाट राग पद्धति—भातखण्डे जी व्यकंटमुखी के 72 थाटों में से दर थाटों को उत्तरी प्रणाली के लिए चुन कर उनके आधार पर रागों की रचना की। थाट राग पद्धति से पहले राग-रागिनी पद्धति प्रचलित थी जिसमें बहुत सारी कमियाँ थी। इन को दूर कर भातखण्डे जी ने थाट-राग पद्धति को प्रचार में लाया। थाट-राग पद्धति से संगीतकारों में नियमबद्ध ढंग से गाने बजाने में योग्यता पैदा हुई।

7. रागों का वर्गीकरण—रागों का वर्गीकरण पण्डित जी ने अपने समय के सौ रागों का निर्माण दस थाटों के आधार पर ही किया। संगीत को शास्त्रों का आधार भी पण्डित जी ने किया जिससे संगीत का विकास वैज्ञानिक और ठीक ढंग से होने लगा।

8. गीत रचना—आपने ख्याल, ध्रुपद धमार तराना और कई लक्ष्ण गीतों की रचना की। भारतीय संगीत में लक्ष्ण को स्थान भी पण्डित जी ने दिलवाया था।

9. संगीत-सम्मेलन—जन-साधारण में संगीत प्रति रुचि पैदा करने के लिए उन्होंने अनेकों गोष्ठियों का प्रबन्ध किया और सन् 1916 को बड़ौदा में संगीत सम्मेलन करवाया। इस संगीत सम्मेलन में देश भर से संगीतकार बुलाए गए। यह सम्मेलन इतना सफल रहा कि सारे भारत में उसकी धूम मच गई। इस तरह भारत में संगीत प्रेमियों की सहायता से संगीत सम्मेलन करवाये गये। इसलिए भारत में किए जाने वाले संगीत सम्मेलनों का श्रेय भी पण्डित जी को जाता है।

10. प्राचीन कलाकारों की सामग्री को स्वर लिपि बद्ध करना और ग्रन्थ परिचय करवाना—भातखण्डे जी ने संगीत कलाकारों की ना समझ आने वाली रचनाओं को इकट्ठा कर के नोटेशन प्रणाली में निबन्ध करके संगीत के विद्यार्थियों पर बहुत परोपकार किया है। आपकी कौन-सी पुस्तक कौन-से ग्रन्थ में उपलब्ध है, इन सभी का वर्णन लिख कर संगीत विद्यार्थियों को नया रास्ता दिखाया।

स्वर्गवास—इस प्रकार भिन्न-भिन्न प्रकार से संगीत का उद्धार करने वाले, इसके प्रचार और प्रसार में अपना सब कुछ देने वाले संगीत की अन्धेरी गलियों को रौशन करने वाली उस महान् विभूति का 19 सितंबर सन् 1936 को स्वर्गवास हो गया।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पण्डित जी का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

2. पं० भातखण्डे जी ने संगीत की शिक्षा कहाँ से प्राप्त की ?

3. पं० भातखण्डे जी की दो पुस्तकों के नाम लिखो।

4. पं० भातखण्डे जी ने पहली संगीत यात्रा कब शुरू की?

5. पं० भातखण्डे जी ने पहला संगीत सम्मेलन कब और कहाँ करवाया ?

6. पं० भातखण्डे जी ने किस स्वर लिपि पद्धति का प्रचलन किया?

7. पं० भातखण्डे जी ने राग वर्गीकरण के लिए किस पद्धति का प्रचलन किया?

8. पण्डित भातखण्डे का देहान्त कब हुआ?

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को और संगीतकारों के बारे और उनकी संगीत प्रति देन बारे बताया जाए।

जीवनी-

(*ii*) श्री नरिन्दर नरूला

श्री नरिन्दर नरूला जी आधुनिक समय के प्रसिद्ध सितार वादक हुये हैं। आपने सितार वादन को भारत के साथ-साथ विदेशों में भी पहुँचाया है। आप देश के प्रसिद्ध सितार वादकों में से एक हैं।

जन्म और माता-पिता–श्री नरिन्दर नरूला जी का जन्म 15 जुलाई 1948 में पटियाला में एक संगीतक माहौल वाले परिवार में हुआ। आपके पिता जी जगदीश राय नरूला जी एक प्रसिद्ध सितार वादक थे, जोकि पटियाला घराने के उस्ताद आशिक अली खां जी के शार्गिद थे। आप जी के पिता ने फिल्म इंडस्ट्रीज में वायलिन वादन कर के खूब नाम कमाया। आप के माता जी श्रीमती ज्ञान कौर अपने समय की एक प्रसिद्ध गायिका थी। आप के माता जी शब्द गायन की शुरुआत करने वाली औरतों में पहली स्त्री थी। इनके गानों और शब्दों की रिकार्डिंग कम्पनी की तरफ से की गई।

सितार शिक्षा–सितार वादन और गायन की प्रारम्भिक शिक्षा आप ने अपने माता पिता जी से ही ली। लगभग पाँच-छ: साल की उम्र से ही आपने सितार सीखना शुरू कर दिया था। आप पिता जी की छत्रछाया में ही सितार का अभ्यास करते थे। आप 12 से 18 घंटे तक अभ्यास करते थे। सन् 1965 में आप सेनिया घराने के प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खां साहिब से सितार सीखने चले गये। उस्ताद विलायत खां साहिब की योग्य अगवाई में संगीत की कठोर साधन हेतु आप एक महान सितार वादक के रूप में उभरे। इसके साथ ही आपने संगीत प्रवीण, संगीत प्रभाकर, गायन और तबला वादन में संगीत विशारद गांधरव महाविद्यालय पूना से की। पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से आपने एम.ए. संगीत की डिगरी प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में जितने भी सितार वादन के मुकाबलों में हिस्सा लिया, आप ने सभी में पहला स्थान प्राप्त किया 1968 में 'गेटीथिऐटर' शिमला में एक ऑल इंडिया ओपन संगीत मुकाबला हुआ उसमें भी आपने पहला स्थान प्राप्त किया।

सन्: 1970 में संगीत लैक्चरार, सरकारी कॉलेज गुरदासपुर में नौकरी शुरू की। 1975 में आप की शादी सुधा नरूला से हुई जोकि एक नृत्य अध्यापिका है। आप के घर दो पुत्रों ने जन्म लिया–यमन नरूला और कुणाल नरूला। आपने सरकारी कॉलेज लड़कियां पटियाला में संगीत विभाग में मुखी के स्थान पर भी नौकरी की।

संगीत प्रोग्राम–आपने 18 साल की उम्र में अपना पहला प्रोग्राम किला चौंक पटियाला में पेश किया। यहाँ आपने खूब वाह–वाही प्राप्त की। इसके बाद आपने पूरे उत्तर भारत में अपने सितार के प्रोग्राम पेश किये।हरिवल्लभ संगीत सम्मेलन जालन्धर में आपने कई बार सितार वादन के प्रोग्राम पेश किये। रेडियो और टी.वी. पर भी आपके सितार वादन के प्रोग्राम प्रसारित होते रहे हैं। सन् 1988 में आपको इंडियन कौंसिल फार कलचरल रिलेशनज़ (I.C.C.R.) की तरफ से सितार वादन के प्रचार के लिये 'फीज़ी' भेजा गया। इसके बाद आपने इंग्लैंड, अमरीका, न्यूज़ीलैंड, सिंघापुर, आस्ट्रेलिया, हालैंड, दुबई, कैनेडा आदि देशों में सितार वादन करके भारत देश का नाम खूब चमकाया। आज कल भी आप देश–विदेश में सितार वादन के प्रोग्राम कर रहे हैं।

वादन शैली–आप की वादन शैली में उस्ताद विलायत खां जी की गायकी अँग की और पटियाला घराने की विशेषताओं की झलक मिलती है। आप अपने सितार वादन से श्रोतायों पर जादू सा प्रभाव डालते हैं। रूह को छूने वाला आलाप, लयकारी वाले तोड़े, झाला मींड की आप की एक खास विशेषता है। ताल और लय पर आपका विशेष अधिकार है। शास्त्रीय सितार वादन के साथ–साथ आप सुगम संगीत की धुनें बजाना भी पसन्द करते हैं। आप के सुगम संगीत के स्पर्श दिल में एक कशिश पैदा करते हैं। आपके मन पसन्द रागों में यमन, पूरीया–धनाजी, बागेश्वरी, मालकौंस चन्द्रकौंस, पीलू, भैरवी राग आदि शामिल है। आपने एक नवीन राग पीलूकौंस की भी रचना की है। इसमें आपने पीलू अंग और कौंस अंग का मिश्रण डाला है। आपने सैंकड़ों वाद्यवृन्द की रचनायों की रचना की है।

सम्मान और उपाधियां–संगीत प्रति आप की महान देन के लिये आप को सम्मान भी प्राप्त हुये हैं। संगीत भारती बीकानेर राजस्थान की तरफ से 'कलाश्री' की उपाधि प्रदान हुई। पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला की तरफ से, पंजाब संगीत रत्न पुरस्कार के साथ सम्मानित किया गया। दी ट्रिब्यून, इंडियन ऐक्सप्रैस, हिन्दोस्तान टाईंमज़ ने तथा और भी कई अखबारों ने आप की प्रशंसा में लिखा है।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. श्री नरिन्दर नरूला का जन्म कब और कहाँ पर हुआ ?
2. श्री नरिन्दर नरूला जी कौन-सा सितार बजाते हैं ?
3. श्री नरिन्दर नरूला जी के गुरु का नाम बताओ।
4. श्री नरिन्दर नरूला की कोई खास विशेषता बताओ।
5. श्री नरिन्दर नरूला के सम्मान और उपाधियों के बारे में बताओ।
6. श्री नरिन्दर नरूला के शिष्यों के बारे में बताओ।

अध्यापक के लिए

अध्यापक विद्यार्थियों को और सितार वादकों की जानकारी दें।

भारतीय संगीत में वाद्यों का वर्गीकरण

पाठ 5

तत वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य और घन वाद्य

भारतीय संगीत में बजाये जाने वाले यन्त्र को वाद्य या साज कहते हैं। संगीत में बजने वाले सभी वाद्य ताल देने के लिये प्रयोग में आते हैं। परन्तु कुछ वाद्य इस तरह के होते हैं जिन की तारों को–स्वरों में मिलाया जाता है। वह वाद्य उन्हीं स्वरों में ही गूँजते रहते हैं–जैसे तानपुरा स्वर मण्डल आदि कुछ वाद्य ऐसे होते हैं जैसे जो सिर्फ लय ही दिखाते हैं। जैसे खड़ताल, चिमटा, मँजीरा आदि। इन साज़ों (वाद्यों) के प्रयोग के आधार पर ही भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण चार भागों में किया गया है।

1. तत वाद्य

(*i*) सितार

(*ii*) वायलिन

(*iii*) सारंगी

(*iv*) संतूर

2. सुषिर वाद्य

(*i*) शहनाई

(*ii*) बाँसुरी

(*iii*) हरमोनियम

(*iv*) प्यानो

3. अवनद्ध वाद्य

(*i*) ढोल (ढोलक)

(*ii*) तबला

(*iii*) ढोलकी

(*iv*) परवावज (मर्दंग)

4. घन वाद्य

(*i*) जलतरंग

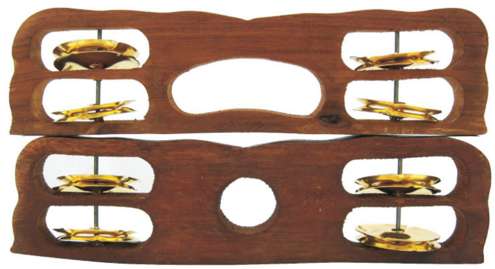

(*ii*) खड़ताल

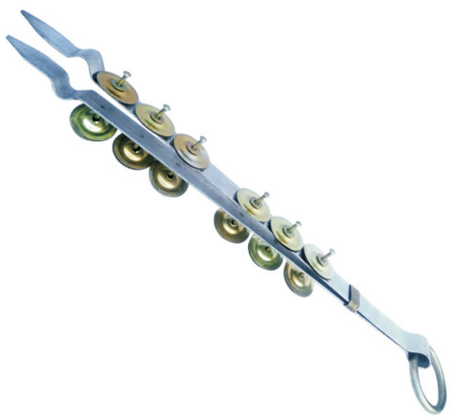

(*iii*) चिमटा

(*iv*) मंजीरा

1. तत वाद्य–जिन वाद्यों के तार चढ़ायें जाते हैं उन वाद्यों को उनकी तारों पर रगड़, प्रहार या आघात के द्वारा ध्वनि पैदा की जाती है। सितार, सरोद, सारँगी आदि इन वाद्यों पर प्रहार करते हुये और तारों को ऊँगलियों से दबाते हुये बजाते हैं जैसे सितार, सरोद आदि कुछ वाद्य इस प्रकार के हैं जिनके चढ़ाये हुये तारों को राग अनुसार वाद्यों पर मिलाया जाता है उसके वाद्य उन तारों पर किसी वस्तु द्वारा आघात कर के भिन्न-भिन्न स्वर बनाये जाते हैं जैसे सन्तूर स्वर मण्डल तानपुरा आदि तत वाद्यों को भी आगे दो भागों में बाँटा जाता है।

(*i*) **तत् वाद्य–**वह वाद्य जिन की तारों पर किसी वस्तु द्वारा आघात या प्रहार करके ध्वनि पैदा की जाती है। वह तत वाद्य कहलाता हैं जैसे सितार सरोद, बैंजो आदि।

(*ii*) **वितत वाद्य–**यह ऐसे वाद्य हैं जिन की तारों को किसी वस्तु द्वारा रगड़ कर ध्वनि पैदा की जाती है जैसे सारँगी, दिलरुबा आदि।

2. सुषिर वाद्य–जिन वाद्यों में हवा भर कर या फूक मार कर स्वर निकाले जाते हैं उन वाद्यों को सुषिर वाद्य कहते हैं। जैसे शहनाई, बाँसुरी आदि।

यह वाद्य भी दो प्रकार के होते हैं–

ऐसे वाद्य जिन में हवा धौंकणी द्वारा हवा भर कर स्वरों की उत्पत्ति की जाती है जैसे हारमोनियम, पियानों आदि।

3. अवनद्ध वाद्य–जिन वाद्यों के मुँह पर चमड़ा मढ़ा होता है उन को अवनद्ध वाद्य कहते हैं जैसे तबला ढोलक, पखावज ढोलकी मृदँग आदि। इन वाद्यों का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है। एक गायक या वादक की संगति करने के लिये यह वाद्य बजाये जाते हैं दूसरा इन वाद्यों का प्रयोग केवल वादन के रूप में भी किया जाता है।

4. घन वाद्य–ऐसे वाद्य जिनमें आपसी रगड़ से ध्वनि पैदा की जाती है उन्हें घन वाद्य कहते हैं। यह वाद्य लकड़ी, लोहे या पत्थर से बने होते हैं जैसे जल तरंग, नल तरंग, मँजीरा आदि।

घन वाद्य दो तरह के होते हैं–

1. भिन्न–भिन्न धातुयों से बने हुये वाद्य जिन में तालबद्ध संगीत धुनें बजाई जाती हैं। जैसे– जल तरंग, नल तरंग, काष्ठ तरंग आदि।

2. कुछ घन वाघ ऐसे हैं जिनका प्रयोग केवल लय देने के लिये किया जाता है जैसे खड़ताल, मँजीरा, चिमटा आदि।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतीय संगीत के वाद्यों का वर्गीकरण कितने भागों में किया गया है ?
2. दो तत वाद्यों के नाम लिखो।
3. हारमोनियम और बाँसुरी कौन से वर्ग में आते हैं?
4. चमड़े से मढ़े हुये वाद्यों को क्या कहते हैं ?
5. दो घनवाद्यों के नाम बताओ।
6. चिमटा और खड़ताल किस वाद्य श्रेणी में आते हैं ?

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों से वाद्यों के वर्गीकरण का चार्ट बनवाया जाये।

*****

पाठ 6

मेरा मन पसंद विषय

संगीत

आज दीपिका का ग्यारहवीं-कक्षा में पहला दिन था। उसके मन में इस बारे बहुत ही उत्साह था कि उसने सभी विषय अपनी पसन्द के रखे हैं। सबसे ज्यादा शौक उसको संगीत कक्षा की कक्षा लगाने का था हाई स्कूल में यह विषय न होने के कारण उसकी संगीत विषय लेने की पहली बार पूरी हुई थी।

स्कूल में तीसरा पीरियड संगीत विषय का था। दीपिका तीसरा पीरियड लगाने संगीत के कमरे में पहुँची। संगीत अध्यापिका श्रीमती सुरिन्दर कौर बहुत ही अच्छे स्वभाव की थी। इस कक्षा में अध्यापिका में सभी विद्यार्थियों की आवाज़ सुनने के लिये पहले उनसे गाने सुने। इसके बाद अध्यापिका ने स्वयं बच्चों को राग भैरव सुनाया। विद्यार्थी सुन इसे बहुत खुश हुये। दीपिका ने अध्यापिक से पूछा मैडम जी, हमें आपका आना बहुत अच्छा लगा, पर इस बारे बहुत अधिक समझ नहीं आया कि आपने क्या सुनाया है। अध्यापिका के प्यार से उसके सरि पर हाथ रख कर समझाते हुए बोला, 'बेटा मैंने आपको भैरव राग सुनाया है। संगीत में जो भी आपको सिखाना है वह राग गायन ही है। दीपिका ने फिर से पूछा कि राग गायन का हमें क्या फायदा होगा ? इस बात को सुन कर अध्यापिका मुस्कुराई और कहा, बेटा, इस संगीत का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। प्राचीन समय से ही ऋषि मुनियों ने संगीत को मोक्ष प्राप्त का साधन माना है। आज के तनाव भरे जीवन में संगीत का उतना ही महत्त्व है। संगीत का प्रयोग आज भी कई तरह की बिमारियों के इलाज के रूप में किया जा रहा है। माना जाता है कि उस्ताद सूरत खां ने रामपुर के नवाब को जैजैवन्ती राग सुना कर अधरंग की बिमारी ठीक कर दी थी। बाँसुरी से निकलने वाली धुनियां (ध्वनियाँ) मानसिक शान्ति प्रदान करती हैं। राग आसावरी सुन कर कम ब्लैड प्रैशर को आराम मिलता है।

अध्यापिका बताने लगी की बातें सुन कर दीपिका उत्साह से बोल पड़ी, 'मैडम जी, फिर तो संगीत का हमें बहुत लाभ है इसका प्रयोग अस्पतालों में भी किया जा सकता है।'

अध्यापिका मुस्कुरा कर बोली, हाँ, तेरी यह बात बिल्कुल ठीक है। इतना ही नहीं, पौधों और पशुओं पर भी संगीत संबंधी प्रयोग किये गये हैं। पौधों को राग गायन सुनाने से वह जल्दी बढ़ने लगते हैं। राग बागेश्वरी सुन कर गायें अधिक दूध देने लग गईं।

एक विद्यार्थी अध्यापिका से पूछने लगी, 'मैडम जी जो संगीत ब्याह शादियों में सुनते हैं उसको सुन कर तो कई बार हमारा सिर ही दुखने लग जाता है।

अध्यापिका बताने लगी, 'हाँ बेटा, यह बात आपकी बिल्कुल ठीक है। आज समाज में ज्यादा' शोर-गुल वाले संगीत को सुना जा रहा है, जो कि तनाव देता है। आज के समय में हमें शास्त्री-संगीत का सहारा लेना चाहिये। शास्त्रीय संगीत में कुछ समय के लिये अपनी बिमारी तक भूल जाते हैं। इससे हमारी याद शक्ति में भी बढ़ोतरी होती है। यहाँ तक कि बच्चों को भी संगीत से ही पढ़ाया जा रहा है। संगीत से ही मानसिक और शारीरिक तनाव दूर होता है। यहाँ तक कि नशे के आदि मनुष्य को नशा छुड़वाने में सहायता करता है।

मैडम जी, क्या संगीत की पढ़ाई करके हम कोई नौकरी भी प्राप्त कर सकते है। अनीता ने अपने मन की बात अध्यापिका को झिजकते हुए पूछी। अध्यापिका ने उत्तर देते हुये कहा, 'हाँ बेटा, क्यों नहीं, संगीत की पढ़ाई करके आप अध्यापन के रोज़गार में नौकरी संगीत कम्पनियों और नाटक कम्पनियों में नौकरी, रेडियो, जो कि पार्श्वगायक के तौर पर काम कर सकते हो और संगीत एकैडमी भी खोल सकते हो।

इतने में पीरियड खत्म होने की घण्टी बज गई। अध्यापिका ने कहा, ''चलो आज के लिये इतना ही बहुत है।''

दीपिका खुश हो कर बोली, 'मैडम जी, एक तो मैं पसन्दीदा विषय लेने पर बहुत खुश थी जब मैं किसी को गाते-बजाते सुनती थी तो मेरा भी मन करता था कि मैं भी संगीत सीखूँ। आज आपने इसके बारे में इतना कुछ बता दिया कि संगीत के प्रति रुचि और भी बढ़ गई है।

इसके बाद सारे विद्यार्थी अपना अगला पीरियड लगाने के लिये चले गए।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अपने मन पसन्द विषय का नाम बताओ।

2. संगीत का कोई एक लाभ बताओ।

3. संगीत की पढ़ाई करके कौन–से क्षेत्र में जाया जा सकता है ?

4. पशु पक्षियों पर संगीत का प्रभाव कैसे पड़ता है ?

5. छोटे बच्चों को शिक्षा देने के लिये संगीत कैसे सहायक है ?

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को इस विषय पर चर्चा करने के लिये कहना–मैने संगीत विषय क्यों लिया है ?

पाठ 7

संगीत का साज

सितार (इतिहास, अंग वर्णन)

सितार भारतीय संगीत वाद्यों की श्रेणी का एक प्रमुख तन्त्रीवाद्य है। भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी इस वाद्य को मान्यता है या प्रसिद्ध है। आज भारत में स्कूलों, कालेजों में विशेष तौर पर सिखाया जाता है। इस वाद्य ने भारतीय संगीत की कीर्ति को विदेशों में भी पहुँचाया है। भारत से बहुत सारे सितार वादक इस वाद्य को सिखाने के लिये विदेशों में भी जाते हैं।

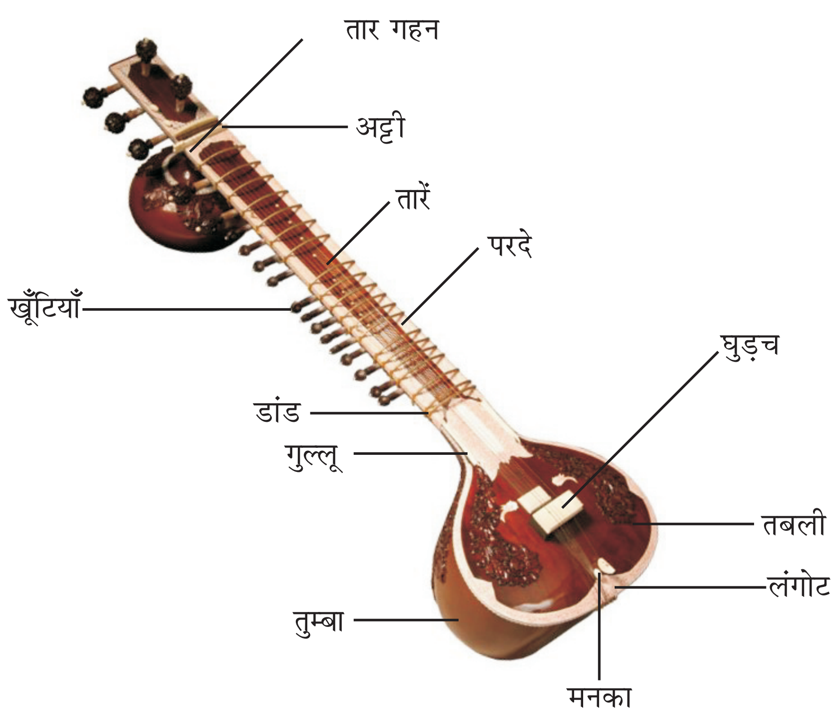

चित्र : सितार

सितार का अविष्कार (इतिहास)–सितार का अविष्कार लगभग चौदवीं शताब्दी में हुआ। सितार के अविष्कार के बारे में भिन्न-भिन्न मत प्रचलित है। एक मत के अनुसार सितार का आविष्कार तीन तारों वाली वीणा के आधार पर हुआ। आरम्भ में इस वाद्य का नाम सेहतार रखा गया। सेहतार फारसी भाषा का शब्द है। 'सेह' का अर्थ है तीन। इस लिये सेहतार का अर्थ हुआ तीन तारों वाला वाद्य। धीरे-धीरे इस वाद्य का नाम बदल कर सितार हो गया।

दूसरे मत अनुसार सितार का आविष्कार 14वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) के दरबारी संगीतकार हज़रत अमीर खुसरो (1253-1325) ने किया। अमीर खुसरो ने इस वाद्य का आविष्कार वीणा के आधार पर किया। कुछ विद्वानों के अनुसार उन्होंने इस वाद्य का आविष्कार परशियन वाद्य 'ऊद' के आधार पर किया। शुरू में इस वाद्य के तारों की गिनती तीन ही थी और परदों की संख्या 14 थी। धीरे-धीरे इस में तारों की संख्या 'छः' फिर सात हो गई और 16 से 24 तक परदे लगाये जाने लगे। आधुनिक खोजों के आधार पर कई विद्वान अमीर खुसरो को सितार का आविष्कारक नहीं मानते। उन विद्वानों का मत है कि यदि अमीर खुसरो ने सितार का आविष्कार किया होता तो अपने ग्रन्थ 'नूरसिपहार', 'किरानूसादेन' में अवश्य वर्णन किया होता। इन ग्रन्थों में अमीर खुसरो ने संगीत के और विषय की रचना तो की है पर सितार के बारे कुछ भी नहीं लिखा मिलता। यदि उस समय तक सितार का आविष्कार हुआ होता तो अमीर खुसरो या उनके समकालीन इतिहासकार 'अबुल फज़ल' इस नये वाद्य का ज़िक्र अपने ग्रन्थ में अवश्य ही करते।

तीसरे मत के अनुसार सितार का आविष्कार सात तारों वाली वीणा के आधार पर हुआ। जिसका नाम पहले (सत्तार) (सात तारों वाला) रखा गया फिर धीरे-धीरे बिगड़ कर सितार पड़ गया।

आधुनिक खोजों के आधार पर आचार्य बृहस्पति और बहुत सारे विद्वानों ने सितार के आविष्कार का श्रेय अमीर खुसरो के स्थान पर खुसरो खां को दिया है। खुसरो खां तानसेन के दामाद मिशरी सिंह वीणा वादक के वंश में से हुए हैं। खुसरो खां और नेमत खां दोनों भाई थे। नेमत खाँ प्रसिद्ध ध्रुपद गायक थे। उन्होंने सदारंग उपनाम से सहस्त्रों बंदिशों की रचनाएं रचीं। खुसरो खां प्रसिद्ध वीणा वादक और विद्वान थे। यही खुसरों खां सितार के अविष्कारक ते। कहा जाता है कि 'खुसरो खां' और अमीर खुसरो के नामों में समानता होने के कारण अमीर खुसरो को सितार के आविष्कार का श्रेय दिया गया। पर वास्तव में सितार का आविष्कार एक खुसरो खां ही थे।

सितार का आविष्कारक कोई भी हो पर सितार को वीणा का ही परिवर्तित रूप माना जाता है।

शुरू में तीन तारों वाले सितार के रूप में कोई परिवर्तन नहीं आया। खुसरो के पौत्र मसीत खां ने सितार में तीन तारें और लगा कर तारों की संख्या छः कर दी। कुछ समय तक छः तारों वाला सितार प्रचलित रहा। बाद में एक तार और जुड़ने से तारों की संख्या सात हो गई। इन्होंने परदों की संख्या 16 से 23 कर दी और अचल थाट वाले सितार का निर्माण किया। मसीत खां ने सितार पर विलम्बित लय की एक वादन शैली का आविष्कार किया। मसीत खां के नाम से ही यह गत प्रचलित हुई। मसीत खां के पुत्र रहीम सेन और पौत्र अमीर खां ने इस शैली का बहुत प्रचार किया। लखनऊ के रज़ा खां ने सितार पर एक द्रुत लय का आविष्कार किया जो उन के नाम पर रज़ा खानी गत के नाम से प्रसिद्ध हुई।

जयपुर घराने के अमृतसेन और निहाल सेन ने भी सितार के रूप में परिवर्तन किये, उन्होंने लकड़ी के तुम्बे के स्थान पर, लौकी के तुम्बे का आविष्कार किया और गूँज बढ़ाने के लिये ऊपर की तरफ एक और तुम्बा लगाया। इस घराने के अन्तिम वादक अमीर खां के शिष्य परम्परा में से उस्ताद इमदाद खां हुये थे। उन्होंने परदों की संख्या 23 से कम करके 19 (उन्नीस) कर दी। सितार में तरब की तारों का प्रचलन, झंकार बढ़ाने के लिये किया। इन्होंने सुरबहार शैली के आधार पर 'ईमदाद खानी' बाज का प्रचलन किया। सितार पर मींड, घसीट, तोड़े, झाले बजाने की शुरुआत की।

उस्ताद इमदाद खाँ के पुत्र इनायत खां हुए थे। इनायत खां के पुत्र उस्ताद विलायत खां प्रसिद्ध सितार वादक थे। विलायत खां ने तुम्बे के आकार को छोटा किया और दो जोड़े के स्थान पर केवल एक जोड़े का तार लगाया। पीतल की पंचम की तार लगाई। इन्होंने सितार पर गायकी अंग की शुरुआत की।

वर्तमान समय में पण्डित रविशंकर ने सितार अतिमन्द्र सप्तक के लरज का तार लगाया। जिस से सितार पर वीणा अंग सम्भव हो गया।

सितार का अंग वर्णन–सितार के अलग-अलग अंग होते हैं। तुम्बा, डांड, गुल्लू, तबली, ज्वारी, मलका आदि। इसका वर्णन इस प्रकार है–

1. तुम्बा–सितार का अर्धगोलाकार भाग जो जंगली लौकी का बनता है, उसे तुम्बा कहते हैं। यह अन्दर से खोखला होता है ताकि आवाज़ में गूँज पैदा हो सके।

2. डांड–सितार का लम्बा खोखला भाग जो तुम्बे के साथ जुड़ा होता है, इसे डांड कहते हैं, इस पर परदे बाँधे जाते हैं।

3. तबली–तुम्बे पर ढक्कन के रूप में काम करने वाला लकड़ी का बना हुआ भाग तबली कहलाता है। तबली पर घुड़च को टिकाया जाता है।

4. गुल्लू–जिस स्थान पर तुम्बे और डांड का जोड़ा होता है उसे गुल्लू कहते हैं।

5. लंगोट–तुम्बे के निचले वाले भाग पर एक कील लगी होती है। उसे लगोट कहते हैं। तार एक तरफ से लंगोट से बन्धे होते हैं और दूसरी तरफ से खूँटियों से बन्धे होते हैं।

6. घुड़च–घुड़च एक छोटी सी पटरी के आकार का होता है। इसे तबली के ऊपर टिकाया जाता है। लंगोट से बन्धी तारें घुड़च के ऊपर से निकलती हैं। घुड़च को ब्रिज या घोड़ी भी कहते हैं।

7. ज्वारी–घुड़च की ऊपरी सतह को ज्वारी कहते हैं। ज्वारी की सतह एक समान होने के कारण स्वरों की आवाज़ में अधिक गूँज पैदा होती है।

8. खूँटियाँ– यह सितार पर लकड़ी की बनी होती हैं। तारों का दूसरा सिरा इन खूँटियों से बन्धा होता है। यह सितार को सुर में करते समय इन्हें कसा या ढीला करने के काम आती है। सितार में मुख्या सात खूँटियाँ होती हैं। यह डांड के ऊपरी भाग में होती हैं। इसके अतिरिक्त तरब की संख्या के अनुसार छोटी खूँटियाँ होती हैं, जो डांड के एक तरफ लगी होती हैं।

9. अट्टी–यह एक लकड़ी या हाथी दांत की बनी हुई पट्टी होती है। तारें इसके ऊपर से होकर जाती हैं।

10. तार गहन–तार गहन भी एक पट्टी है जो एक हड्डी की बनी होती हैं। इस में छिद्र होते हैं। अट्टी के ऊपर से होकर तारें गहन के छिद्रों में से निकल कर खूँटियों तक जाती हैं।

11. परदे–यह लोहे या पीतल के बने हुए टुकड़े होते हैं जो अर्द्धगोलाकार में मुड़े होते हैं। इनको सितार ऊपर स्वर-स्थान निश्चित करने के लिये डांड ऊपर तांत के साथ बांधा जाता है। परदों की संख्या 16 से 24 तक होती है। 16 परदों वाला सितार चल थाट का सितार कहलाता है। 19 से 24 परदों तक की सितार अचल थाट की सितार कहलाती है क्योंकि इन में परदे सरकाने नहीं पड़ते।

12. मनका–मनके हाथी दांत या काँच के बने होते हैं। यह गोल, चपटे, चिड़िया, बत्तख, हाथी आदि आकार के होते हैं। मनका तार में लंगोट के नज़दीक तबली ऊपर या डांड के सिरे में खूँटियों के नज़दीक पिरोया जाता है। सितार स्वरों में (सुर) में करते हुये यदि थोड़ा-सा फरक (अन्तर) रह जाये तो इस मनके द्वारा कम या अधिक किया जा सकता है।

13. तारें–सितार में मुख्य सात तारें होती हैं। सितार की तारों के नीचे कुछ तार बन्धे होते हैं जिन्हें तरब की तारें कहते हैं। तरब के तारों की संख्या 9-13 तक होती है।

सितार की तारें और उनको मिलाने का ढंग–

सितार में मुख्य सात तारें होती हैं। पहला तार लोहे का या स्टील का होता है। इसको बाज़ का तार कहते हैं। दूसरा और तीसरा तार पीतल का बना होता है। इनको जोड़ी के तार कहते हैं। चौथा तार पीतल का होता है जोकि जोड़ी के तार से कुछ मोटा होता है। इसको लरज़ का तार कहते हैं। पाँचवाँ तार आज के तार की तरह लोहे या स्टील का होता है। जिस की मोटाई पँचम की तार से कुछ कम होती है। इसको बड़ी चिकारी कहते हैं। सातवां तार भी स्टील का होता है। यह तार सभी तारों से पतला होता है इसको 'चिकारी' या 'पपीहे का तार' कहते हैं।

सितार में मुख्य सात तारों के अतिरिक्त परदों के नीचे लोहे का तार लगे होते हैं। जिनको तरब के तार कहते हैं। इन की गिनती 8 से 13 तक होती है।

सितार के तारों को सुर में करन के लिये सबसे पहले जोड़ी के तारों को मन्द्र सप्तक के 'स' के साथ मिलाया जाता है। इसके बाद बाज़ के तारों को मन्द्र सप्तक के माध्यम 'म' मिलाया जाता है। फिर लरज़ के तार को मन्द्र सप्तक के पँचम (प) से मिलाया जाता है। पाँचवें तार को मन्द्र पँचम पर मिलाया जाता है। छटे और सातवें तार को क्रमवार मध्य सप्तक के 'स' और तार सप्तक के 'स' पर मिलाया जाता है। मुख्य तारों को स्वर में कर लेने के बाद तरब की तारों को राग में लगने वाले स्वरों के अनुकूल मिलाया जाता है। सितार को अच्छी तरह सुर में करने के बाद ही बजाना चाहिये।

सितार की बैठक–सितार वादन करने के लिये सितार को एक विशेष प्रकार से पकड़ कर बैठा जाता है जिसे हम सितार की बैठक कहते हैं। ठीक स्थिति में बैठ कर सितार सुविधापूर्वक बजाई जा सकती है। सब से पहले बाईं टाँग को घुटने से मोड़ लिया जाता है और दाहिनी टाँग उसके ऊपर से निकाल कर बैठा जाता है। बायें पैर पर सितार का तुम्बा टिका कर सितार को टेढ़ा खड़ा कर लिया जाता है। सितार की डांड वाला भाग मुँह के आगे नहीं आना चाहिये। दाईं कोहनी तुम्बें के ऊपर रखी जाती है इससे तुम्बे को दबा लिया जाता है ताकि सितार खिसके ना। दायें हाथ के अँगूठे को गुल्लू के स्थान पर रखा जाता है। बायें हाथ का अँगूठा डांड के पीछे रखा जाता है, और अगली तरफ ऊँगलियों के साथ परदे ऊपर तार दबा कर स्वर निकाले जाते हैं। दायें हाथ की तरजनी ऊँगली में मिज़राब डालकर तार के ऊपर प्रहार करके आवाज़ पैदा की जाती है। सितार बजाते समय बायें हाथ से डांड को सहारा नहीं देना चाहिये नहीं तो सितार बजाने में असुविधा होती है। सितार के विद्यार्थियों को ठीक बैठक का ज्ञान ले कर ही सितार बजानी चाहिये।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सितार का आविष्कार कब हुआ ?
2. सितार के आविष्कारक का नाम बताओ।
3. सितार में कितने तार होते हैं ?
4. तुम्बा किस चीज़ का बना होता है ?
5. घुड़च की ऊपरी सतह को क्या कहते हैं ?
6. उस्ताद विलायत खां ने सितार में क्या बदलाव किया ?
7. जोड़े की तारों को किस स्वर पर मिलाया जाता है ?
8. दो सितार वादकों के नाम बताओ।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों से सितार के अंग वर्णन का चार्ट बनवाया जाये और सितार की बैठक विद्यार्थियों को सिखाई जाये।

✱✱✱✱✱

पाठ 8

नाद–

परिभाषा, भेद

परिभाषा

न नादेन बिना गीत न नादेन बिना स्वर:

न नादेन बिना ज्ञान न नादेन बिना शिव:

(मतंग)

नाद बिना न तो गीत का जन्म होता है, न ही स्वर का। नाद बिना न ज्ञान प्राप्त होता है और न ही कल्याण हो सकता है।

रत्नाकर अनुसार 'न' और 'द' नकार-प्राण (हवा) और दकार-आग (शक्ति) के मेल से बना है। ये सारे ब्रह्माण्ड का आधार बन गया। नाद का भाव वह आवाज़ जो संगीत उपयोगी हो।

नाद नियमित और स्थिर कम्पन, मीठी आवाज़ होती है जो संगीत उपयोगी हो। नाद संगीत का मुख्य तत्त है, इसके बिना संगीत की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

कोई भी आवाज़ जब मीठी और ख़ुशी भरी हो, तो नाद का रूप धारण कर लेती है। और संगीत का प्राण बन जाती है। मधुर आवाज़ के साथ ही संगीत का निर्माण हुआ है। इसका प्रभाव मनुष्य पर ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों पर भी पड़ता है।

आवाज़ दो प्रकार की होती है–

(1) जिस को सुनना अच्छा लगता, इसको शोर भी कह सकते हैं।

(2) जिस से मन ख़ुशी से भर जाते हैं, और आन्नद आने लग जाए और मन को छू जाए।

नाद के भेद– नाद के दो भेद होते हैं–

1. आहत नाद
2. अनाहत नाद

1. आहत नाद–यह नाद स्थूल वस्तुओं से उत्पन्न होता है। दो वस्तुओं के टकराने या रगड़ से जो आवाज़ पैदा होती है उसे आहत नाद कहते हैं जैसे– ताली बजाना, वायलिन बजाना। इस नाद को तीन भागों में बाँटा जाता है–

1. एक वस्तु का दूसरी वस्तु से टकराने जैसे ताली बजाना, सितार पर मिजराब का टकराना।

2. दो वस्तुओं के रगड़ने पर जो नाद उत्पन्न हो जैसे वायलिन या सारंगी।

3. छेद में से तेज़ी से हवा निकलने से जो आवाज़ निकलती है जैसे बाँसुरी, शहनाई और हारमोनियम।

2. अनाहत नाद–बिना किसी चोट, रगड़, आघात से जो नाद पैदा होता है उसे अनाहत नाद कहा जाता है। ऋषि मुनि इस को अनाहद नाद भी कहते हैं। मोक्ष प्राप्ति के लिए वे उपासना करते थे। यह नाद बहुत ही सूक्ष्म होता है। इस को कानों से नहीं सुन सकते। कानों में उँगलियों को डाल कर साऽसाऽऽ की आवाज़ को महसूस किया जा सकता है। यह नाद मोक्ष प्राप्ति के लिए सहायक होता है। यह रंजक नहीं है यह सांसारिक व्यवहार के लिए नहीं है।

नाद के लक्षण

1. नाद का छोटा–बड़ापन (Intensity)

2. नाद का ऊँचा–नीचापन (Pitch)

3. नाद की जाति (Timber)

1. नाद का छोटा बड़ापन–आवाज़ का कम या अधिक सुनाई देना, नाद काछोटा बड़ापन कहलाता है। कम ऊँचे बोलने से आवाज़ नज़दीक और ऊँची आवाज़ में बोलने से दूर तक सुनाई देती है। हारमोनियम बजाते हुए बायें हाथ से धीरे से हवा भरने से आवाज़ कम और बढ़ाने से आवाज़ ऊँची सुनाई देती है। इसको आवाज़ का छोटापन या बड़ापन कहते हैं।

2. नाद का ऊँचा या नीचापन–नाद का दूसरा गुण नाद का अपने स्थान से ऊँचा और नीचा होना है। स से रे स्वर तक ऊँचा होता है, रे से ग, ग से म। इसी प्रकार म से ऩी नीचा होता है और ऩी से ध़, ध़ से प़। नाद अपने स्थान से ऊँचा भी हो सकता है और नीचा भी। इसी को ही संगीत में नाद का ऊँचा या नीचापन कहा जाता है।

3. नाद की जाति–यह नाद की तीसरी विशेषता है। इस विशेषता से यह पता चलता है कि यह आवाज़ किस की है। यह नाद, आवाज़ को पहचाने में मदद करता है। वाद्य को देखे बिना ही उस की आवाज़ सुन कर ही पहचानने कि यह सितार की आवाज़ है, हारमोनियम की, वायलिन या किसी और साज़ (वाद्य) की।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. संगीत उपयोगी आवाज़ को क्या कहते हैं ?
2. नाद की किस्मों के नाम बताओ।
3. आहत नाद किसे कहते हैं ?
4. अनाहत नाद किसे कहते हैं ?
5. जो आवाज़ धीरे सुनाई देती है, उसको नाद का कौन-सा पन कहते हैं ?

अध्यापक के लिए

वाद्यों की सहायता से और कानों पर उँगुली रखवा कर विद्यार्थियों को नाद बारे जानकारी दी जाए।

पाठ 9

गत–

मसीतखानी गत, रज़ाखानी गत

ताल की तालबद्ध रचना जो किसी वाद्य पर बजाई जाती है उसे गत कहा जाता है। संगीत शास्त्र अनुसार–

राग के स्वरों की सुन्दर और तालबद्ध रचना जो किसी वाद्य पर बजाई जाती है उसको गत कहा जाता है या हम यह कह सकते हैं कि सितार वाद्य पर बजाई जाने वाली तालबद्ध राग की रचना को गत कहते हैं।

किसी भी राग को आरम्भ करने से पहले उसी राग के स्वरों के आलाप, जोड़ आलाप, आरोह अवरोह और पकड़ के राग की गत बजाई जाती है। गत के दो भाग स्थाई और अन्तरा होते हैं। राग की गत बजाने वाले को गतकार और गत बजाने की कला को गतकारी कहते हैं। आधुनिक युग में निम्नलिखित दो प्रकार की गतों का प्रचलन होता है।

1. मसीतखानी गत
2. रज़ाखानी गत

1. मसीतखानी गत–मसीतखानी गत की वादन शैली को दिल्ली-बाज़ भी कहा जाता है। इस गत का अविष्कार फिरोज़खान के बेटे (पुत्र) मसीत खां ने किया था। उनके नाम पर ही इस गत का नाम पड़ा गया था। यह गत विलम्बित लय में बजाई जाती है। इस गत के बोल दिर दा दिर दा रा दा दा रा। यह गत हमेशा तीन ताल में बजाई जाती है और गत का आरम्भ बारहवीं मात्रा से हो कर ग्यारवीं मात्रा पर समाप्त होता है (विलम्बित गत में गमक मींड बहुत अधिक दिखाया जाता है। इसमें चौगुन और आठ गुण के तोड़े बजा कर अन्त में तिहाई बजा कर गत की समाप्ति की जाती है।

मसीतखानी गत की विशेषताएँ–

1. मसीतखानी गत तीन ताल में बजाई जाती है।
2. यह गत विलम्बित लय में बजाई जाती है।
3. इस गत का मुखड़ा ग्यारहवीं मात्रा से शुरू किया जाता है।
4. इस गत के मिज़राब के बोल निश्चित होते हैं। जैसे दिर दा दिर दारा दा दा रा।

2. रज़ाखानी गत–लखनऊ के मुहम्मद रजा खां ने सितार वादन के लिए एक नई गत का अविष्कार किया उनके नाम पर ही इस गत का नाम रज़ाखानी गत पड़ गया। इस गत का दूसरा नाम द्रुत गत भी है। आजकल मसीतखानी गत के बाद रज़ाखानी गत का वादन किया जाता है। इस गत में स्थाई, अन्तरा के बाद दुगुन लय के तोड़े बजाए जाते हैं। इन तोड़ों को समाप्ति के बाद तिहाई के साथ सम्पन्न करते हैं। इन तोड़ों के बाद गत तेज़ करते हुए झाला बजाया जाता है और बीच-बीच तोड़ों का प्रयोग उसी लय में किया जाता है। झाले में मिज़राब का भिन्न-भिन्न तरह का प्रयोग जैसे ठोक झाला बजाया जाता है और अन्त में तिहाई बजा कर गत की समाप्ति की जाती है। यह गत भी तीनताल, झपताल रूपकताल, एक ताल में बजाई जाती है। परन्तु गत की लय अधिकतर तीन ताल में ही बजाई जाती है। इस गत की स्थायी हमेशा खाली अर्थात् नौवीं मात्रा से शुरू की जाती है। परन्तु आजकल इसके मुखड़े अलग-अलग मात्राओं से भी शुरू किए जाते हैं। इस गत के बोल दा दिर दा रा दा दिर दा रा दा ऽ दा रा दा दिर दा रा या दा दिर दा रा दा ऽ दा रा दा दिर दिर दिर दा ऽ र दा ऽ र रा

रज़ाखानी गत की विशेषताएँ–

1. रज़ाखानी गत का दूसरा नाम द्रुतगत या पूर्बीवाज़ है।
2. यह गत हमेशा नौवीं मात्रा अर्थात् खाली से शुरू की जाती है।
3. इसमें हमेशा चौगुन, आठगुण के तोड़े बजाए जाते हैं।

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. गत की परिभाषा बताओ।
2. मसीतखानी गत का प्रचलन किस ने किया ?
3. मसीतखानी गत का आरम्भ कौन-सी मात्रा से शुरू होता है ?

4. मसीतखानी गत के बोल बताओ।
5. रज़ाखानी गत को और किस नाम से जाना जाता है ?
6. रज़ाखानी गत का प्रचलन किस ने किया ?

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को सितार पर बजा कर मसीतखानी और रज़ाखानी गत में अन्तर बताएँ ।

*****

क्रियात्मक भाग

पाठ 10

अलंकार

1. बिलावल थाट

आरोह 1 –	स	रे	ग	म	प	ध	नी	सं
	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
अवरोह –	सं	नी	ध	प	म	ग	रे	स
	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा

आरोह 2 –	सस	रेरे	गग	मम	पप	धध	नीनी	संसं
	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर
अवरोह –	संसं	नीनी	धध	पप	मम	गग	रेरे	सस
	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर

आरोह 3 –	सरेग	रेगम	गमप	मपध	पधनी	धनीसं
	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा
अवरोह –	संनीध	नीधप	धपम	पमग	मगरे	गरेसं
	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा

आरोह 4 –	ससगग	रेरेमम	गगपप	ममधध	पपनीनी	धधसंसं
	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर
अवरोह –	संसंधध	नीनीपप	धधमम	पपगग	ममरेरे	गगसस
	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर

आरोह 5 –	सरेगमप	रेगमपध	गमपधनी	मपधनीसं
	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा
अवरोह –	संनीधपम	नीधपमग	धपमगरे	पमगरेस
	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा

2. कल्याण थाट

आरोह 1 –	स	रे	ग	म॑	प	ध	नी	सं
	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
अवरोह –	सं	नी	ध	प	म॑	ग	रे	स
	दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा

आरोह 2 –	सस	रेरे	गग	म॑म॑	पप	धध	नीनी	संसं
	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर
अवरोह –	संसं	नीनी	धध	पप	म॑म॑	गग	रेरे	सस
	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर

आरोह 3 –	सरेग	रेगम॑	गम॑प	म॑पध	पधनी	धनीसं
	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा
अवरोह –	संनीध	नीधप	धपम॑	पम॑ग	म॑गरे	गरेस
	दारादा	दाराद	दारादा	दारादा	दारादा	दारादा

आरोह 4 –	ससगग	रेरेम॑म॑	गगपप	म॑म॑धध	पपनीनी	धधसंसं
	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर
अवरोह –	संसंधध	नीनीपप	धधम॑म॑	पपगग	म॑म॑रेरे	गगसस
	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर	दिरदिर

आरोह 5 –	सरेगम॑प	रेगम॑पध	गम॑पधनी	म॑पधनीसं
	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा
अवरोह –	संनीधपम॑	नीधपम॑ग	धपम॑गरे	पम॑गरेस
	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा	दारादारादा

✵✵✵✵✵

पाठ 11

राग कल्याण

साधारण परिचय–

थाट	– कल्याण
वादी स्वर	– गन्धार (ग)
सम्वादी स्वर	– धैवत (ध)
स्वर	– मं स्वर तीव्र, बाकी सभी स्वर शुद्ध
जाति	– सम्पूर्ण–सम्पूर्ण
प्रकृति	– गम्भीर
मिलते जुलते राग	– यमन, कल्याण
न्यास के स्वर	– रे ग प नी
समय	– रात का पहला प्रहर
आरोह	– ऩी रे ग मं पर ध नी सं
अवरोह	– सं नी ध प मं ग रे स
पकड़	– ऩी रे ग रे, स, प मं ग, रे स

विशेष नियम – यह राग अपने थाट का आश्रय राग है। इस राग में मं स्वर तीव्र और बाकी सभी स्वर शुद्ध लगते हैं। कल्याण राग प्राचीन राग है, पर मुस्लिम समय में इस राग को 'यमन' या 'ईमन' कहने लगे। इस राग में करुण रस की प्रधानता है। ग (गंधार) स्वर–वादी होने से यह प्रर्वाग वादीराग बनता है। पूर्वांग में आरोह करते हुए अधिकतर 'स' (षड्ज) को छोड़ ऩी रे ग स्वर बजाते हैं और उत्तरांग के स्वर कहते हुए 'प' (पंचम) स्वर को छोड़ कर मं ध नी सं स्वर बजाते हैं। कल्याण के कई प्रकार हैं, जैसे शुद्ध कल्याण, पूरिंया कल्याण, जैत कल्याण आदि।

आलाप (1) ऩी रे, ऩी रे ग, रे स, ऩी ध, ऩी रे ग, ऩी रे, ऩी रे स

(2) ऩी रे ग, रे स, ऩी रे स ऩी ध़, ऩी रे ग रे, ऩी रे, रे स, स ऩी ध़ प मं, ध़ ऩी , रे ग, ग रे, ऩी रे स।

राग कल्याण (तीनताल)
मसीतखानी गत (विलम्बित लय)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
स्थाई											पप	म॑	गग	म॑	ध
नी	नी	ध	पप	म॑	रेंरे	ग	प	रे	रे	स	दिर	दा	दिर	दा	रा
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अन्तरा											पप	म॑	गम॑	ध	नी
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सं	सं	सं	नीरें	गं	रेंरें	सं	नी	ध	प	म॑					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

राग कल्याण

मसीतखानीगत (तीनताल)

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1.					नीरेगरे	नीरेस	गमपम	गमंध	मंधनीध	पमंगरे	गरेस–	पप	मं–	गग	मं–	ध–
					दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
2.	नीनीरेरे	गगमंमं	धधनीनी	रेरेसं–	नीरेसंनी	संनीधप	नीधपमं	धपमंग	पमंगरे	मंगरेस	गरेस	पप	मं–	गग	मं–	ध–
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
3.	नीनीधप	धपमंप	मंरेगरे	गगरेग	रेरेग–	गमंपमं	मंमंध	मंधनीध	धधनी–	संनीधप	मंधनीध	नी–संनी	धपमंप	नीधनी–	संनीधप	मंधनीध
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा
4.	धधनी–	धनीसनी	नीनीरे–	नीरेगरे	रेरेग–	गमंपम	मंमंध–	मंधनीध	धधनी–	संनीधप	मंधनीध	नी–संनी	धपमंध	नीधनी–	संनीधप	मंधनीध
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा
5.	नीनीनीनी	धनीरेंनी	धमंप	पपपप	मंगमध	नीधप–	गमंपम	गमंगरे	मंगरेस	नीनीधप	मंगमंध	नी–नीनी	धपमंग	मंधनी–	नीनीधप	मंगमंध
	दिरदिर	दिरदिर	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा
6.	नीरेगरे	नीरेगरे	नीरेगरे	गमंप–	गमंधनी	गमंधनी	गमंधनी	धमंप–	मंधनीसं	मंधनीसं	मंधनीसं	नीरेगं–	मंधनीध	नी–मंध	नीधनी–	मंधनीध
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा

राग कल्याण (तीनताल)
रज़ाखानी गत (द्रुतलय)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
												नी़	नी़नी़	रे	रे
												दा	दिर	दा	रा
स्थाई															
ग	–	ग	रे	ग	म॑म॑	पप	म॑म॑	गऽ	गरे	ऽरे	स				
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा				
												नी़	ध़ध़	नी़	रे
												दा	दिर	दा	रा
ग	म॑म॑	प	प	म॑	धध	पप	म॑म॑	गऽ	गरे	ऽरे	स				
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽरा	दा				
												म॑	गग	म॑	प
												दा	दिर	दा	रा
अन्तरा															
नी	नीनी	सं	–	नी	रेंरें	गंगं	रेंरें	नीऽ	नीरें	ऽरें	स				
दा	दिर	दा	ऽ	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा				
												नी	रेंरें	गं	रें
												दा	दिर	दा	रा
सं	नीनी	ध	प	म॑	धध	पप	म॑म॑	गऽ	गरे	ऽरे	स				
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा				

राग कल्याण

रज़ाखानी गत (द्रुत लय)

तोड़े

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
1	–	–	–	–	–	–	–	गमं	पमं	गमं	पमं	गमं	पमं	गरे	स–
								दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
2. ऩीरे	गरे	गमं	पमं	गम	पमं	गग	रेस	–	–	–	–	–	–	–	–
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	–	–	–	–	–	–	–	–
3. ऩीरे	स–	रेग	मं –	गमं	प–	मंप	ध–	पध	नी–	धनी	सं–	संनी	धप	मग	रेस
दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
4. ऩीरे	गमं	पमं	गमं	ऩीरे	गमं	पमं	गमं	ऩीरे	गमं	पमं	गमं	पमं	गमं	गरे	स–
दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा

राग कल्याण (तीन ताल)

रज़ाखानी गत (द्रुतलय)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
स्थाई												नी̣	ध̣ध̣	नी̣	रे
ग	–	ग	रे	ग	म॑म॑	पप	म॑म॑	ग–	गरे	–रे	स	दा	दिर	दा	रा
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा				
												नी	नीनी	ध	प
म॑	धध	प	–	ग	म॑म॑	पप	म॑म॑	ग–	गरे	–रे	स	दा	दिर	दा	रा
दा	दिर	दा	ऽ	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽरा	दा				
												प	पप	सं	–
अन्तरा												दा	दिर	दा	ऽ
नी	रेरे	सं	–	नी	रेंरें	गंगं	रेंरें	सं–	संनी	–नी	स				
दा	दिर	दा	ऽ	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दा				
												गं	रेंरें	नी	रें
												दा	दिर	दा	रा
सं	–	नी	ध	प	म॑म॑	गग	म॑म॑	ग–	गरे	–रे	स				
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	–र	दा				

राग कल्याण
रज़ाखानीगत (तीनताल)

तोड़े

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	×				2				0				3			
1.	–	–	–	–	ऩीरे	गरे	मंध	नीसं	नीध	पमं	गरे	स–	–	–	–	–
2.	–	–	–	–	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	–	–	–	–
	ऩीरे	गमं	रेग	मंप	गमं	पध	मंध	नीसं	संनी	धप	मग	रेस	–	–	–	–
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	–	–	–	–
3.	सऩी	धप	मंप	गमं	पध	मप	धनी	संऽ	नीध	पमं	गरे	स–	–	–	–	–
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	–	–	–	–
4.	सऩी	रेस	गरे	मंग	पम	धमं	नीध	संनी	रेंस	गरें	संनी	धप	मंग	रेस	ऩीरे	गरे
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
5	गरें	संगं	रेंसं	गरें	संनी	धनी	संध	नीसं	धनी	संनी	धप	मंप	गप	मंग	मंप	गमं
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
	नीध	पमं	गरे	म–	ऩीरे	गमं	पध	नीसं	संनी	धप	मग	रेस	–	–	–	–
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	–	–	–	–
6.	संगं	रेंसं	नीरे	संऩी	धसं	नीध	पनी	धप	मंध	पमं	गप	मंग	रेमं	गरे	सग	रेस
	ऩीध	ऩीरे	ऩीरे	ग–	ऩीध	ऩीरे	ऩीरे	ग–	ऩीध	ऩीरे	ऩीरे	ग–	दारा	दारा	दारा	दारा
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा				

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राग कल्याण का थाट बताओ।
2. राग कल्याण का आरोह–अवरोह बताओ।
3. राग कल्याण को कब बजाया जाता है ?
4. इस राग में कौन से स्वर लगते हैं ?
5. राग कल्याण की जाति बताओ।
6. राग पहचान :– ऩी रे ग मं, परे, गरे, ऩीरे स

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को सितार पर राग कल्याण बजाना सिखाए।

✵✵✵✵✵

पाठ 12

राग अल्हिया बिलावल

आरोहन मध्यम नहीं, ध-ग सम्वाद स्थान
उतरत कोमल नी लगै ताही अल्हिया जान

साधारण परिचय

थाट	–	यह बिलावल थाट का जन्य राग है।
स्वर	–	कभी-कभी अवरोह में कोमल नी वक्र रूप में प्रयोग होती है।
वादी-सम्वादी स्वर	–	इस राग का वादी स्वर (ध) धैवत और सम्वादी गन्धार है (ग)।
वर्जित स्वर	–	आरोह में मध्यम (म) स्वर वर्जित है। मिलता-जुलता राग – बिलावल
जाति	–	इस राग के आरोह में 'म' स्वर वर्जित होने के कारण इसकी जाति षाड्व-सम्पूर्ण है।
अंग	–	'ध' स्वर वादी होने के कारण उत्तरांग वादी स्वर राग है।
समय	–	इस राग का गाने बजाने का समय दिन का पहला पहर है।
न्यास के स्वर	–	स और प
आरोह	–	स, रे गरे, गप, ध नी सं
अवरोह	–	सं नी ध, प, ध नी ध प, म ग म रे स
पकड़	–	ग रे,ग प, ध, नी ध नी सं

विशेष नियम –

1. आरोह में 'म' स्वर का प्रयोग नहीं किया जाता है परन्तु कभी-कभी अवरोह में कोमल नी का वक्र प्रयोग किया जाता है सं नी ध प, ध नी ध प।
2. आरोह में 'ग' का वक्र रूप में प्रयोग किया जाता है।

आलाप–

1. स, ग रे, ग प, ग म ग रे, ग म रे स।
2. स रे ग, प, ध नी ध प, म ग म रे, स रे ग प, म ग ग रे स।
3. ग प ध नी सं, रें सं सं रें, गं मं रें स, नी ध प, ध नी ध प, ग म रे स।

अल्हिया बिलावल (तीनताल)

रज़ाखानीगत (द्रुत लय)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
स्थाई								स	मम	ग	म	ऽ	नीनी	ध	नी
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दिर	दा	रा
सं	–	–	नी	ध	मम	ग	म								
दा	ऽ	ऽ	रा	दाऽ	दिर	दा	रा								
								ग	मम	ध	नी	सं	नीनी	ध	म
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
म	पप	धध	मम	गऽ	गरे	ऽरे	स								
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रादा	ऽरा	दा								
अन्तरा								म	गग	म	म	प	धध	नी	नी
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सं	–	सं	सं	नी	नीनी	सं	सं								
द	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ध	नीनी	सं	गं	रें	संसं	नी	ध
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
म	पप	धध	मम	गऽ	गरे	ऽरे	स								
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रादा	ऽरा	दा								

राग अल्हिया बिलावल (तीनताल)

रज़ाखानी गत (द्रुत लय)

तोड़े

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1.	गरे	गग	प–	गग	पप	ध–	धध	नीनी	–	–	–	–	गत			
	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								
2.	गप	मग	मरे	धनी	धप	मग	मरे	सस	–	–	–	–	गत			
	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								
								3.	गग	पप	धध	नीनी	सं–	धनी	सं–	धनी
									दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर
								4.	संनी	धनी	पप	धप	मध	मग	मरे	सस
									दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर

राग अल्हिया बिलावल (तीनताल)
(मसीतखानी गत) (विलम्बित लय)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई											गरे	ग	पप	नी	नी
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सं	सं	सं	नीनी	सं	रेंरें	नी	सं	धनीनी	धप	मग					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दादिर	दारा	दारा					
											गरे	ग	मम	प	ग
											दिर	दा	दिर	दा	रा
म	रे	स	नीनी	सं	रेरे	नी	सं	धनीनी	धप	मग					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दादिर	दारा	दारा					
अन्तरा											पप	नी	धध	नी	नी
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सं	सं	सं	सस	सं	रेंरें	गं	मं	ग	रे	स					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											नीनी	सं	रेंरें	नी	सं
											दिर	दा	दिर	दा	रा
ध	नीनी	ध	प	ग	पप	धनीनी	संरें	संनी	धप	मग					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दादिर	दारा	दारा	दारा	दारा					

अल्हिया बिलावल मसीतखानी गत (विलम्बित लय) तीनताल

तोड़े

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
–	–	–	–	सरेरे	गप	मग	मरे	गपप	धनी	सं–		--------- गत पकड़नी है			
				दादिर	दिर	दिर	दिर	दादिर	दिर	दिर					
–	–	–	–	नीसंसं	गंरें	संनी	धप	धनीनी	धप	मग		--------- गत पकड़नी है			
				दादिर	दिर	दिर	दिर	दादिर	दिर	दिर					
सनी़नी़	धऩी	स–	रेगग	पम	ग–	पमम	गरे	गप	धनी	सं–					
दारिद	दिर	दिर	दादिर	दिर	दिर	दादिर	दिर	दिर	दिर	दिर		---------			
सररे	स–	गरे	स–	प़प़प़	ध़ऩी	स–	पमम	गरे	गप	नीनी		---------			
दादिर	दिर	दिर	दिर	दादिर	दिर	दिर	दादिर	दिर	दिर	दिर					

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. अल्हिया बिलावल राग के थाट का नाम लिखो।
2. अल्हिया बिलावल राग के साथ मिलते-जुलते राग का नाम लिखो।
3. इस राग का गाने-बजाने का समय क्या है?
4. राग की पहचान करो-

   नी ध प, ध नी ध प, म ग म रे स
5. इस राग की प्रकृति कैसी है?
6. राग अलैहिया बिलावल का वादी स्वर क्या है?
7. इस राग की जाति क्या है?
8. राग अलैहिया बिलावल में कौन-कौन से स्वर लगते हैं ?

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को राग के बारे में समझा कर सितार पर रजाखानी गत, मसीतखानी गत बजाना सिखाना।

*****

पाठ 13

राग वृन्दावनी सारंग

साधारण परिचय

थाट – काफी
वादी स्वर – रे रिषभ
सम्वादी – प (पंचंम)
स्वर – आरोह में शुद्ध नी और अवरोह में कोमल <u>नी</u> का प्रयोग होता है।
वर्जित स्वर – ग और ध
जाति – औढ़व-औढ़व
गाने का समय – दिन का दूसरा प्रहर (दोपहर)
न्यास के स्वर – स रे प
प्राकृति – चंचल
मिलता-जुलता राग – सुर मल्लाह
आरोह – ऩी स, रे म प, नी सं
अवरोह – सं <u>नी</u> प म रे स
पकड़ – ऩी स रे, मरे पम रे ऩी सा

इस राग की रचना उत्तर प्रदेश के एक लोकगीत के आधार पर हुई है। इस भाग में रजाखगत और मसीतखानी गत बजाई जाती है। सारँग के कई प्रकार हैं जैसे गौड़ सारँग, शुद्ध सारँग, मीयां की सारँग वऽ हँस सारँग, मद्ध माद सारँग आदि।

आलाप–

1. स ऩी स रे, रे म रे, प म रे सा रे म रे ऩी स
2. ऩी सरे, मरे, मप <u>नी</u> प मरे, रे म प मरे ऩीस
3. म प नी सं, नी सं, म प नी सं रें नी सं, <u>नी</u> प म प, स रे, ऩी स

वृन्दावनी सारँग रज़ाखानी गत तीनताल (द्रुत लय)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
×				2				0				3			
						पनी	संरे	नी	संसं	नी	प	मं	रेरे	नी़	स
						दिर	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
रे	–	म	म	प	–										
दा	ऽ	दा	रा	दा	ऽ										
						रे	म	प	नीनी	म	प	नी	संसं	नी	प
						दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सं	नीनी	प	म	रे	स										
दा	दिर	दा	रा	दा	रा										
						म	पप	मा	पप	नी	प	म	पप	नी	नी
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सं	–	सं	सं	रें	नीनी	सं	–								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	ऽ								
								प	नीनी	सं	रें	नी	संसं	नी	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
म	नीनी	प	म	रे	म										
दा	दिर	दा	रा	दा	रा										

वृन्दावनी सारँग

रज़ाखानी गत तीनताल (द्रुत लय)

तोड़े

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
	×				2				0				3			
1	–	–	–	–	–	–	नीस	रेम	रेम	पनी	संरें	संरें	संनी	पम	रेस	नीस
							दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
2	–	–	–	–	–	–	मप	नीसं	रेंसं	नींसं	पनी	पम	रेम	रेस	नीस	रेस
							दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
3	–	–	–	–	संनी	पम	रेम	रेस	रेम	रेस	नीस	रेस	नीस	रेम	पनी	सं–
					दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
4	–	–	–	–	संनी	पनी	पम	रेस	नीस	रेम	पनी	संरें	पनी	पम	रेस	नीस
					दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
5	–	–	–	–	संरें	संनी	पनी	पम	पनी	पम	रेम	पम	रेम	पम	रेस	नीस
					दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
6																
	नीस	रेम	रेस	पनी	संरें	संनी	पम	रेस	रेम	रेस	रे–	रेम	रेस	रे–	रेम	रेस
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
7																
	नीस	रेम	रेम	रेस	रेम	पनी	पनी	पम	मप	नीसं	रेंमं	रेंसं	पनी	पम	रेस	नीस
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा
	नीस	रेम	रेस	नीस	रे–	––	नीस	रेम	रेस	नीस	रे–	––	नीस	रेम	रेस	नीस
	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा	दारा

राग वृन्दावनी सारँग

मसीतखानी गत, तीनताल (विलम्बित लय)

तोड़े

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई											मपनींस	नी	पप	म–रेरे	नीस
											दिरदिर	दा	दिर	दाऽदिर	दिर
रे	रे	स	नीस	रे	मम	नी	प	म	रे	स					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											मम	रे	मम	प	मपनीनी
											दिर	दा	दिर	दा	दिरदिर
अन्तरा															
सं	सं	सं	नीसं	रें	संसं	नी	प	मपनीसं	नीपमरे	नीस					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिरदिर	दिरदिर	दिर					

वृँदावनी साराँग
(विलम्बित गत) तीनताल

तोड़े

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1.	नीसरेम	रेसरेम	रेसरेम	पनीपम	पनीपम	पनीसरें	संनीसरें	संनी,संनी	पम,पम	रेम,रेस	रेसनीस					
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा					
2.	पमपनी	पमपनी	पमपम	रेगरेस	नीसरेम	नीसरेम	रेमपम	रेसनीस	नीसरेम	मपनीसं	मपनीसं					
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा					
3.	नीसरेस	रेमरेस	रेमपनी	पमपनी	पनीसरें	नीसंरेमं	रेंसंनीसं	संनीपम	नीपमरे	रेमपनी	पमरेस					
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा					
4.	नीसरेस	नीसरेम	रेसनीस	नीसरेम	पमरेस	नीसरेम	पनीपम	रेसनीस	नीसरेम	पनीसरें	संनीपम	रेसनीस	पमरेस	रे–पम	रेमरे–	पमरेस
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा
5.	स–सस	सससस	नीसरेस	रेमप–	रे–रेरे	रेरेरेरे	रेमपम	पमप–	प–पप	पपपप	पनीपम	पनीसं–	संनीपम	रे–संनी	पमरे–	संनीपम
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा
6.	रेमपनी	सं–ससं	मपनीसं	रें–रेंरें	संनीपम	रे–रेरे	नीसरेम	रेमपनी	पनीसरें	संनीपम	रेमरेस	रे–संनी	पमरेम	रेमरे–	संनीपम	रेमरेस
	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा	दारादारा

पाठ्य अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. वृन्दावनी सारंग किस अंग का राग है।
2. वृन्दावनी सारंग का थाट बनाओ।
3. राग वृन्दावनी सारंग की जाति बताओ।
4. राग वृन्दावनी सारंग का अरोह-अवरोह लिखो।
5. वृन्दावनी सारंग राग में कौन-कौन से स्वरों का प्रयोग किया जाता है?
6. राग पहचानो :

   नी स रे म, प नी प म रे, नी स
7. राग वृन्दावनी सारंग का समय बताओ।
8. सारंग भाग के रागों के नाम बताओ।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को वृन्दावनी सारंग राग की रजाखानी गत, मसीतखानी गत सितार पर बजाना सिखाना।

✱✱✱✱✱

पाठ 14

तालें

I ताल दादरा

साधारण परिचय

दादरा ताल छः मात्रा की होती हैं। इस ताल के तीन-तीन मात्रा के दो विभाग होते हैं। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली और चौथी मात्रा खाली तबले पर बजाई जाती है।

	मात्रा	1	2	3	4	5	6
बोल	एक गुण	धा	धिं	ना	धा	तिं	ना
	दुगुन	धाधिं	नाधा	तीनां	धाधिं	नाधा	तीनां
		×			0		

II कहरवा ताल

इस ताल की आठ मात्राएँ होती हैं जिनको चार-चार मात्राओं के दो-दो विभागों में बाँटा गया है। इस ताल की पहली मात्रा पर सम या ताली और पाँचवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल के साथ सुगम संगीत के साथ तबले पर बजाई जाती है। इस के साथ बच्चे-बूढ़े नाच पड़ते हैं।

	मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8
बोल	एक गुण	धा	गे	न	तीं	न	क	धिं	ना
	दुगुन	धागे	नतीं	नक	धिंना	धागे	नतिं	नक	धिंना
		×				0			

III तीनताल

साधारण परिचय

तीनताल तबले की प्रसिद्ध ताल है। इस ताल को 'त्री' ताल या तीनताल कहते हैं। तीनताल की 16 मात्राएँ होती हैं। जिन को चार-चार मात्राओं के विभाग में बांटा गया है। इस ताल की पहली, पाँच और तेहरवीं मात्रा पर ताली और नौवीं मात्रा पर खाली होती है। इसका प्रयोग गायन में द्रुतख्याल, तराना भजन शब्द के साथ, तन्त्र वाद्यों में मसीतखानी गत, रज़ाखानी गत और नृत्य में कत्थक नृत्य आदि में बजाया जाता है। यह ताल विलम्बित मध्य और द्रुत लय में बजाई जाती है।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल																
एक गुण	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
दुगुन	धाधिं	धिधा	धाधि	धिधां	धाति	तिंता	ताधिं	धिंधा	धाधि	धिधा	धाधि	धिंधा	धाति	तिता	ताधिं	धिधां
	×				2				0				3			

IV झपताल

साधारण परिचय

झपताल तबले की खन्ड जाति की प्रचलित ताल है। झपताल की 10 मात्राएँ होती हैं इस ताल की 2-3, 2-3, मात्रा के चार विभाग होते हैं। इस ताल की पहली तीसरी आठवीं मात्रा पर ताली और छटी मात्रा खाली होती है। इसकी झूमती हुई ताल से इसका नाम झपताल पड़ गया। यह ताल श्रृंगार रस की परिचारिक है। इस ताल को ख्याल गीत, कत्थक नृत्य और गतों के साथ बजाते हैं।

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
बोल एक गुण	धिं	ना	धिं	धिं	ना	तिं	ना	धिं	धिं	ना
दुगुन	धिना	धिंधीं	नातिं	नाधि	धिना	धिना	धिंधी	नाति	नाधि	धिंना
	×			2			0		3	

V चारताल (चौताल)

साधारण परिचय

चारताल पखावज की ताल है परन्तु आजकल भी खुले हाथ से बजाई जाती है। इस ताल में 12 मात्राएँ होती हैं। इसकी दो–दो मात्राओं के छः विभाग होते हैं। ताल की पहली मात्रा पर सम या पहली ताली, पाँचवी नौवीं ग्यारवीं मात्रा पर क्रम अनुसार दूसरी तीसरी और चौथी ताली है इसकी तीसरी और सातवीं मात्रा खाली है। यह गम्भीर प्राकृति की ताल है। इसके बोल खुले बजाए जाते हैं। इस का अधिकतर प्रयोग ध्रुपद शैली के साथ होता है।

मात्रा	1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
बोल एक गुण	धा धा	धिं ता	किट धा	धिं ता	तिट कत	गदि गन
दुगुन	धांधा धिंता	किटधा धिंता	तिटकत गदिगन	धाधा धितां	किटधा धिंधा	तिटकत गदिगन
	×	0	2	0	3	4

पाठ 15

धुन

(i) राग कल्याण (ताल कहरवा)

1	2	3	4	5	6	7	8
×					ऩी	रे	–
स्थाई					दा	रा	ऽ
ग	–	गम॑	प				
दा	ऽ	दिर	दा	–	रे	ग	रे
				ऽ	दा	रा	दा
स	–	–	–	–	ऩी	रे	–
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दा	रा	ऽ
				–	रे	ग	रे
				ऽ	दा	रा	दा
ग	ऽ	गम॑	प				
दा	ऽ	दिर	दा				
				–	ऩी	रे	ऽ
				ऽ	दा	रा	ऽ
स	–	–	–				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				
				–	रे	ग	रे
				ऽ	दा	रा	दा
ग	–	प	प				
दा	ऽ	दा	रा				
स	–	–	–				
दा	ऽ	ऽ	ऽ				

अन्तरा

				–	ग	–	म॑
				ऽ	दा	ऽ	दा
ध	–	म॑	ध				
दा	ऽ	दा	रा				
				सं	–	सं	सं
				दा	ऽ	दा	रा
नी	रें	सं	–	–			
दा	रा	दा	ऽ	ऽ			
				–	नी	–	नी
				ऽ	दा	ऽ	रा
नी	सं	सं	सं	स	–	ध	नी
दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा
ध	प	म॑	ध	प			
दा	रा	दा	रा	दा			
				–	–	म॑	–
				ऽ	ऽ	दा	ऽ
ग	म॑	ग	रे	सं			
दा	रा	दा	रा	दा			

(ii) वृन्दावनी सारँग (ताल कहरवा)

1	2	3	4	5	6	7	8
स्थाई				0			
नी	सं	नी	सं	नी	सं	नी	सं
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
मं	रें	सं	नी	प	–	–	–
दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	ऽ	ऽ
प	नी	प	नी	प	नी	प	नी
दा	रा	दा	रा	दा	ऽ	ऽ	ऽ
स	नी	प	म	दा	रा	दा	रा
प	नी	सं	सं	सं	सं	सं	–
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
म	प	नी	नी	नी	नी	नी	–
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	ऽ
अन्तरा							
प	नी	सं	रें	सं	नी	प	म
दा	रा	दा	रा	दा	रा	दा	रा
–	प	नी	म	प	–	–	–
ऽ	दा	रा	दा				
प	म	रे	स	–	रे	स	नी
दा	रा	दा	रा	ऽ	दा	रा	दा
प	नी	स	रे	स	–	–	–
स	रे	–	म	म	प	–	नी
दा	रा	दा	रा	दा	रा	ऽ	दा
प	नी	–	सं	मंरें	संनी	सं	–
दा	रा	ऽ	द	दिर	दिर	दाऽ	ऽ

✵✵✵✵✵

पाठ 16

राष्ट्रीय गान

भारत की आज़ादी से पहले कई कवियों ने भारतवासियों के दिलों में भारत को आज़ाद करवाने के लिए कई जोश भरे गीत और कविताएँ लिखी। जिन में बंगाल के एक महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने रचित गीत को देश के समुख रखा क्योंकि रवीन्द्र नाथ टैगोर के मन में राष्ट्रीय चेतना कूटकूट कर भरी हुई थी। सन् 1908 के बाद उन्होंने कई और भी राष्ट्रीय रचनाएँ लिखीं। इन गीतों के द्वारा उन्होंने भारतवासियों के दिलों में जोश, मर मिटने का जज़्बा और आत्मविश्वास जगाया।

24 जनवरी 1950 वाले दिन संविधान सभा के अध्यक्ष 'राजेन्द्र प्रसाद' ने इस दिन अपने पद से फैसला सुनाया कि रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा रचित जन-गण-मन राष्ट्रीय गान होगा।

देश का कोई भी राष्ट्रीय समारोह और राष्ट्रीय दिवस इस गीत से ही आरम्भ और समाप्त होता है। स्कूलों, कॉलजों और यूनिवरर्सिटीयों में इसको बहुत आदर दिया गया है और इसका हर रोज़ गायन होता है। और तो और यदि अन्तरराष्ट्रीय खेलों में भारत भाग लेता है तो वहाँ भी राष्ट्रीय गान को प्राथमिकता दी जाती है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे

भारत भाग्य विधाता।

पंजाब-सिन्धु गुजरात मराठा

द्राविड़ उत्कल बंग

विंध्य हिमाचल यमुना गंगा

उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा
जन–गण–मंगल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे –––।

राष्ट्रीय गान के नियम

1. राष्ट्रीय गान का गायन हमारे सभी राष्ट्रीय समारोहों के आरम्भ और समाप्ति में किया जाता हैं। इसके गायन सम्बन्धी नियमों का पालन करना आवश्यक है।
2. राष्ट्रीय गान का गायन 52 सैकिन्ड में समाप्त होना चाहिए।
3. इसका गायन सावधान मुद्रा में खड़े होकर करना चाहिए।
4. इसका गायन एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए।
5. इसका गायन करते समय आँखों को इधर–उधर धुमाते रहना नहीं चाहिए अर्थात् आँखों से शून्य की तरह देखना चाहिए।
6. जहाँ भी कहीं राष्ट्रीय गान का गायन सुनाई दे उसके प्रति सम्मान की भावना प्रकट करनी चाहिए।

राष्ट्रीय गान की स्वरलिपि

स	रे	ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	ग	रे	ग	म	–
ज	न	ग	ण	म	न	अ	धि	ना	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ
ग	–	ग	ग	रे	–	रे	रे	ऩी	रे	स	–	–	–	स	–
भा	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्	य	वि	धा	ता	ऽ	ऽ	ऽ	पं	ऽ
प	–	प	प	–	प	प	प	प	–	प	म॑	प	म॑	प	–
जा	ऽ	ब	सिं	ऽ	धु	गु	ज	रा	ऽ	त	म	रा	ऽ	ठा	ऽ
म	–	म	म	म	म	ग	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	
द्रा	ऽ	वि	ड़	उ	त	क	ल	बं	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
ग	–	ग	ग	ग	–	ग	रे	प	प	प	म	म	–	म	–
वि	ऽ	ध्य	हि	मा	ऽ	च	ल	य	मु	ना	ऽ	गं	–	गा	ऽ
ग	–	ग	ग	रे	रे	रे	रे	नि़	रे	स	–	–	–	–	–
उ	ऽ	च्छ	ल	ज	ल	धि	त	रं	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	ग	ग	ग	–	ग	–	रे	ग	म	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	ना	ऽ	मे	ऽ	जा	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	म	प	प	प	–	म	ग	रे	म	ग	–	–	–	–	–
त	व	शु	भ	आ	ऽ	शि	ष	मां	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	ग	–	रे	रे	रे	रे	नि़	रे	स	–	–	–	–	–
गा	ऽ	हे	ऽ	त	व	ज	य	गा	ऽ	था	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	प	प	प	–	प	म	प	–	प	प	म॑	ध	प	–
ज	न	ग	ण	मं	ऽ	ग	ल	दा	ऽ	य	क	ज	य	हे	ऽ
म	–	म	म	ग	–	ग	ग	रे	म	ग	–	–	–	नी	नी
भा	ऽ	र	त	भा	ऽ	ग्य	वि	धा	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
सं	–	–	–	–	–	नि	ध	नी	–	–	–	–	–	ध	प
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य
ध	–	–	–	–	–	–	–	स	स	रे	रे	ग	ग	रे	ग
हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	य	ज	य	ज	य	ज	य
म	–	–	–												

प्रश्न बैंक

प्रश्न 1. संगीत के तीन अंगों के नाम बताओ ?

उत्तर— गायन, वादन, नृत्य।

प्रश्न 2. कोई एक अलँकार लिखो।

उत्तर— सरेग रेगम गमप मपध पधनी धनीसं।

अवरोह – संनीध नीधप धपम पमग मगरे गरेस।

प्रश्न 3. विलम्बित लय की दो तालों के नाम बताओ।

उत्तर— आड़ा चारताल, तिलवाड़ा ताल।

प्रश्न 4. मध्य लय की दो तालों के नाम लिखो।

उत्तर— झपताल, तीन ताल।

प्रश्न 5. झाले की किस्मों के नाम बताओ।

उत्तर— 1. उलट झाला 2. सुलट झाला।

प्रश्न 6. राग के खास स्वर-समूह को क्या कहते हैं ?

उत्तर— पकड़।

प्रश्न 7. राग की भूमिका किस को कहते हैं ?

उत्तर— आलाप।

प्रश्न 8. सितार किस चीज़ से बजाई जाती है ?

उत्तर— मिज़राब।

प्रश्न 9. मिज़राब द्वारा किए जाते प्रहार के नाम बताओं।

उत्तर— आकर्ष प्रहार, अपकर्ष प्रहार।

प्रश्न 10. राजा स्वर किसे कहते हैं ?

उत्तर— वादी स्वर।

प्रश्न 11. वादी सम्वादी स्वरों में कौन-सा सम्बन्ध है ?

उत्तर— षड़ज पँचम भाव या षड़ज मध्यम भाव।

प्रश्न 12. वह कौन-से स्वर हैं जिनकी तुलना प्रजा से की है।

उत्तर— अनुवादी स्वर।

प्रश्न 13. राग में लड़ाई झगड़ा पैदा करने वाले स्वरों को क्या कहते हैं ?

उत्तर— विवादी स्वर।

प्रश्न 14. राग में जिन स्वरों की मनाही होती है उन्हें क्या कहते हैं ?

उत्तर— वर्जित स्वर।

प्रश्न 15. पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे का जन्म कब और कहाँ हुआ ?

उत्तर— 10 अगस्त 1860 को बम्बई के बालकेश्वर प्रांत में।

प्रश्न 16. पं. भातखण्डे की दो पुस्तकों के नाम लिखो।

उत्तर— हिन्दोस्तानी संगीत पद्धति, क्रमिक पुस्तक मालिका।

प्रश्न 17. पण्डित जी का देहान्त कब हुआ ?

उत्तर— 19 सितम्बर 1938 को।

प्रश्न 18. श्री नरिन्दर नरुला का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर— 15 जुलाई 1948 में पटियाला में।

प्रश्न 19. श्री नरिन्दर नरुला के पिता का क्या नाम था ?

उत्तर— श्री जगदीश राये नरुला।

प्रश्न 20. श्री नरिन्दर नरुला जी कौन-सा वाद्य बजाते थे ?

उत्तर— सितार।

प्रश्न 21. श्री नरिन्दर नरुला जी के गुरु का नाम बताओ।

उत्तर— उस्ताद विलायत खां।

प्रश्न 22. दो तत्त वाद्यों के नाम बताओ।

उत्तर— सितार, सरोद।

प्रश्न 23. हवा के साथ बजने वाले वाद्यों को क्या कहते हैं ?

उत्तर— सुषिर वाद्य।

प्रश्न 24. दो अवनद्ध वाद्यों के नाम बताओ।

उत्तर— तबला, ढोलकी।

प्रश्न 25. सितार का अविष्कार कब हुआ ?

उत्तर— चौंदवी शताब्दी में।

प्रश्न 26. सितार के अविष्कारक का नाम बताओ।

उत्तर— खुसरो खाँ।

प्रश्न 27. सितार के चार भागों के नाम बताओ।

उत्तर— डांड, तुम्बा, तबली, लंगोट।

प्रश्न 28. तुम्बे और डांड के जोड़ स्थान को क्या कहते हैं ?

उत्तर— गुल्लू।

प्रश्न 29. सितार में मुख्य कितनी तारें होती हैं ?

उत्तर— सात।

प्रश्न 30. दो सितार वादकों के नाम बताओ।

उत्तर— उस्ताद विलायत खां, निखिल बैनरजी।

प्रश्न 31. बाज के तार को किस स्वर से मिलाया जाता है।

उत्तर— मन्द्र सप्तक के मध्यम से।

प्रश्न 32. नाद की किस्मों के नाम बताओ।

उत्तर— आहत नाद और अनाहत नाद।

प्रश्न 33. मसीतखानी गत किसने चलाई ?

उत्तर— मसीत खां ने।

प्रश्न 34. मसीतखानी गत का आरम्भ किस मात्रा से शुरू होता है ?

उत्तर— 12वीं मात्रा से।

प्रश्न 35. मसीतखानी गत के बोल बताओ।

उत्तर— दिर दा दिर दा रा, दा दा रा।

प्रश्न 36. रज़ाखानी गत किस ने चलाई ?

उत्तर— रज़ा खां ने।

प्रश्न 37. रज़ाखानी गत का दूसरा नाम बताओ।

उत्तर— पूर्बीबाज।

प्रश्न 38. राग कल्याण के थाट का नाम बताओ।

उत्तर— कल्याण थाट।

प्रश्न 39. राग कल्याण के वादी सम्वादी सुर बताओ।

उत्तर— वादी ग, सम्वादी नी।

प्रश्न 40. राग कल्याण का गायन समय बताओ।

उत्तर— रात का पहला पहर।

प्रश्न 41. राग कल्याण की जाति बताओ।

उत्तर— सम्पूर्ण–सम्पूर्ण।

प्रश्न 42. राग अल्हिया बिलावल का थाट बताओ।

उत्तर— बिलावल

प्रश्न 43. राग अल्हैया बिलावल का गायन समय बताओ।

उत्तर— सुबह का पहला प्रहर।

प्रश्न 44. राग अल्हिया बिलावल का वादी सम्वादी स्वर बताओ।

उत्तर— वादी ध, सम्वादी ग।

प्रश्न 45. राग अल्हिया बिलावल के वर्जित स्वर बताओ।

उत्तर— आरोह में मध्यम।

प्रश्न 46. राग वृन्दावनी सारंग का थाट बताओ।

उत्तर— काफी।

प्रश्न 47. राग वृन्दावनी सारंग का अंग बताओ।

उत्तर— शुद्र सारंग।

प्रश्न 48. राग वृन्दावनी सारंग की जाति बताओ।

उत्तर— औढ़व–औढ़व।

प्रश्न 49. दोनो निषाद प्रयोग होने वाले राग का नाम बताओ।

उत्तर— वृन्दावनी सारंग।

प्रश्न 50. वृन्दावनी सारंग के साथ मिलते जुलते राग का नाम बताओ।

उत्तर— सूर मल्लाह।

प्रश्न 51. दादरा ताल में कितनी मात्राएँ होती हैं ?

उत्तर— छ : मात्राएँ।

प्रश्न 52. दादरा ताल में खाली कौन-सी मात्रा पर आती है ?

उत्तर— पाँचवीं मात्रा पर।

प्रश्न 53. दादरा ताल की दूसरी मात्रा पर कौन-सा बोल होता है ?

उत्तर— धिं।

प्रश्न 54. झपताल की कितनी मात्राएँ होती हैं ?

उत्तर— दस मात्राएँ।

प्रश्न 55. झपताल के कितने विभाग होते हैं ?

उत्तर— 2-3, 2-3 मात्रा के चार विभाग।

प्रश्न 56. झपताल की कितनी तालीयाँ होती है ?

उत्तर— तीन तालीयाँ।

प्रश्न 57. झपताल की ताल में खाली कौन-सी मात्रा पर है ?

उत्तर— छठी मात्रा पर।

प्रश्न 58. 16 मात्राओं वाली ताल का नाम बताओ।

उत्तर— तीनताल।

प्रश्न 59. तीनताल में ताली कौन-सी मात्रा पर होती है ?

उत्तर— पहली, पाँचवीं और तेहरवीं मात्रा पर।

प्रश्न 60. तीनताल में खाली कौन-सी मात्रा पर आती है ?

उत्तर— नौवीं मात्रा पर।

प्रश्न 61. 12 मात्रा वाली ताल का नाम बताओ ?

उत्तर— चारताल।

प्रश्न 62. चारताल के कितने विभाग होते हैं ?

उत्तर— 2-2 मात्रा के छः विभाग।

प्रश्न 63. चारताल में कितनी तालीयाँ होती हैं ?

उत्तर— चार तालीयाँ।

प्रश्न 64. चारताल में खाली कौन-सी मात्रा पर होती है ?

उत्तर— तीसरी और सातवीं मात्रा पर।

प्रश्न 65. चारताल की पाँचवीं मात्रा पर कौन-सा बोल आता है ?

उत्तर— किट।